M.A Ist Semester Paper Code - A080704T
Paper 4th Demography (1)

जनांकिकी का अर्थ समझाइए।
Explain meaning of Demography

Demography शब्द ग्रीक भाषा के दो शब्द Demo तथा Graphy से बना है Demo का अर्थ जनता तथा Graphy का अर्थ लिखना से मिलकर बना है जिसका अर्थ है 'जनता के विषय में लिखना'। इस शब्द का सर्व प्रथम प्रयोग फ्रांसीसी लेखक आशिले गुइलार्ड ने 1855 में किया था

प्राचीन काल में जनसंख्या सम्बन्धी आंकड़े किसी न किसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु इकट्ठे किये जाते थे और जनसंख्या सम्बन्धी अध्ययन का क्षेत्र गणना तक ही सीमित था लेकिन आधुनिक युग में जनसंख्या का आकार, संरचना तथा अन्य वितरण का अध्ययन तथ्यपूर्ण सांख्यिकी एवं गणितीय विश्लेषण के आधार पर किया जाने लगा

हिपिल, जोसी के अनुसार "जनांकिकी वह विज्ञान है जो मानव-पीढ़ी, उसकी वृद्धि, ह्रास तथा मृत्यु का सांख्यिकीय पद्धति से अध्ययन करता है।"

थाम्पसन एवं लेविस के अनुसार "जनांकिकी रुचि वर्तमान समय की जनसंख्या के आकार, संरचना तथा वितरण में ही नहीं बल्कि समय-समय पर इन पक्षों में हो रहे परिवर्तन एवं इन परिवर्तनों के कारणों में भी है।"

इस प्रकार जनांकिकी के अन्तर्गत जनसंख्या के समस्त निर्धारक तत्वों तथा उनके परिणामों का अध्ययन किया जाता है इसमें जनसंख्या की सामाजिक, आर्थिक, भौगोलिक तथा जैविक स्थिति का अध्ययन किया जाता है।

जनांकिकी की विषय सामग्री ②
Subject matter of Demography

वर्तमान समय में जनांकिकी विज्ञान की व्यापकता एवं उपादेयता के आधार पर इस शास्त्र की विषय सामग्री को पांच भागो मे बांटा गया है -

1 - जनसंख्या का आकार
2 जनसंख्या की संरचना
3 जनसंख्या का वितरण
4 जनसंख्या को प्रभावित करने वाले तत्व
5 जनसंख्या नीति

प्रथम जनसंख्या का आकार किसी समय किसी स्थान विशेष में रहने वाली जन समुदाय की समस्त ~~जनसंख्या~~ संख्या को उस स्थान विशेष की जनसंख्या का आकार कहा जाता है जनसंख्या परिवर्तन की मात्रा व दर जानने के साथ-साथ इस तथ्य का विश्लेषण करना आवश्यक है कि इसके परिवर्तन के कारक कौन-कौन से है जन्म, मृत्यु एवं प्रवास, सामाजिक एवं सांस्कृतिक को भी सम्मिलित करते है द्वितीय में जनसंख्या की संरचना जहांपर दो स्थानों की जनसंख्या का आकार समान होने पर भी उनमें लिंग आयु, जाति, धर्म तथा निवास आदि के आधार पर भिन्नता हो सकती है। तृतीय में यह अध्ययन किया जाता है विश्व अथवा उसके किसी हिस्से में जनसंख्या का वितरण कैसा है इसमें समग्रात्मक विधि, वितरणात्मक विधि जनसंख्या के सम्बन्ध में भौगोलिक इकाई, महाद्वीप, रेगिस्तान क्षेत्र पर्वतीय क्षेत्र तथा सम्पूर्ण विश्व को आधार मानकर तथा देश, प्रदेश, जिला, शहर, नगर गांव आदि होते है चतुर्थ में जब मनुष्य की सामाजिक स्थिति में परिवर्तन हो जाता है अर्थात जब मानव अविवाहित से विवाहित हो जाता है बेरोजगार को रोजगार मिलने से जनांकिकी परिवेश को प्रभावित करता है पांचवा जनसंख्या नीति में यह देखा जाता है देश की जनसंख्या के आकार को उसके साधनो के अनुरूप कैसे घटाया या बढाया जाय कैसे गुणात्मक एवं परिमाणात्मक सुधार हो।

जनांकिकी एवं अर्थशास्त्र में सम्बन्ध स्पष्ट कीजिए।

(3)

Explain ... Relation between Economics and Demography

जनांकिकी का अर्थशास्त्र से घनिष्ट सम्बन्ध माना जाता है अर्थ मानव के सभी क्रिया कलापो की धुरी है तथा अर्थशास्त्र मानव के आर्थिक पहलुओं का अध्ययन करता है विभिन्न आर्थिक चरो के परिवर्तन जनांकिकी चरो व घटको को प्रभावित करते हैं तथा जनांकिकी घटक किसी देश के निवासियों आर्थिक क्रियाओं को प्रभावित करते हैं इस प्रकार जनसंख्या विकास एवं आर्थिक विकास दोनो ही एक दूसरे पर आश्रित है तथा एक दूसरे को प्रभावित करते है जनसंख्या वृद्धि से प्रति व्यक्ति आय गिरता है जीवन स्तर गिरता है इसी तरह से आर्थिक विकास से जन्म दर गिरती है, मृत्यु दर गिरती है, प्रवास रुकता है और बेरोजगारी तथा भुखमरी ... समस्या का निदान होता है।

इस प्रकार जनसंख्या तथा आर्थिक विकास के मध्य दोहरा सम्बन्ध पाया जाता है जनसंख्या जहां आर्थिक विकास के लिए आवश्यक है दूसरी ओर एक दायित्व भी है जब जनसंख्या अधिक होती है तो सम्पूर्ण आर्थिक क्रिया बढ़ जाती है इसमे बेरोजगारी, PCI, आवास, शिक्षा, यातायात, खाद्यान्न पूर्ति, मूल्य में वृद्धि, बचत, औद्योगिक विनिर्माण, स्वास्थ्य की समस्या उत्पन्न हो जाती है। सकारात्मक पक्ष है कि देश के लिए श्रम शक्ति में वृद्धि, बाजार का विस्तार, मांग में वृद्धि, उत्पादन वृद्धि, रोजगार एवं आय में वृद्धि होती है। अर्थव्यवस्था प्रगति के पथ पर अग्रसर हो जाती है।

जनांकिकी का महत्व
Importance of Demography

जनांकिकी के महत्व को समस्त अर्थव्यवस्था को तीन भागो में बांटा गया हैं - विकसित अर्थव्यवस्था है जिनमें जनसंख्या की कुल मांग को पूर्ण रोजगार स्तर बनाये रखने का एक साधन माना जाता हैं विकसित देशो में वस्तु की पूर्ति की नहीं बल्कि मांग की समस्या हैं अतः बढ़ती हुई जनसंख्या वस्तुओं एवं सेवाओं के प्रभावपूर्ण मांग में वृद्धि करती हैं जिससे उत्पादन एवं रोजगार में वृद्धि होती हैं श्रम शक्ति में वृद्धि होती हैं जनस्वास्थ्य, आवास, बीमा, शिक्षा आदि का बहुत महत्व दिया जाता हैं द्वितीय में नियोजित अर्थव्यवस्था हैं इसमें इन देशो में कार्यशील जनसंख्या महिलाओं का आर्थिक कार्यो में योगदान, राष्ट्रीय आय, प्रति व्यक्ति आय, प्रजननशीलता, मृत्युक्रम, परिवार का आकार, स्वास्थ्य पोषण, शिशु शिक्षा आदि अनेक आर्थिक तत्व हैं जो जनांकिकी के ही अवयव इसीलिए स्वतंन्त्र अर्थव्यवस्थाओं की अपेक्षा नियन्त्रित अर्थव्यवस्थाएं जनसंख्या में संरचनात्मक परिवर्तन के प्रति अधिक जागरूक हैं तृतीय हैं विकासशील अर्थव्यवस्था मानव श्रम आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाला उत्पादन का एक सक्रिय साधन हैं यह पूंजी निर्माण प्रक्रिया को निर्धारित करती हैं प्रो० लेविस के अनुसार "विकास मानव प्रयास का परिणाम हैं।" आर्थिक विकास की दृष्टि से जनसंख्या सम्बधी आकड़ो का बहुत अधिक महत्व है क्योंकि जनसंख्या के आकड़ो के आधार पर ही आर्थिक विकास की प्रवृत्ति, व्यवसायिक संरचना, ग्रामीण एवं नगरीय जनसंख्या में वृद्धि की दर, परिवार नियोजन और खाद्य समस्या आदि का अध्ययन होता है।

आयु संरचना से आप क्या समझते है।

भारत में, जनांकिकी संक्रमण के तीसरे अवस्था के पूर्वार्द्ध में है। यद्यपि जन्म दर में गिरावट की प्रवृत्ति आ गयी है लेकिन जैविक रूप से पुनरुत्पादक वर्ग (संतानोत्पत्ति समूह) का आकार बड़ा है होने के कारण कुल जनसंख्या वृद्धि में अभी भी विस्फोटक प्रवृत्ति बनी हुई है सामान्य रूप से विभिन्न आयु वर्गों की अपनी विशेषताएं व समस्याएं है। जहां बाल एवं वृद्ध आयु वर्ग की निर्भरता जनसंख्या के अन्तर्गत आती है वहीं युवा व प्रौढ़ आयुवर्ग अर्थव्यवस्था के विकास में अपना योगदान देते है बाल आयु वर्ग (0-14) वर्ष में 32% जनसंख्या है पुनः इन्हे तीन भागो में बाटा जा सकता है 0-4 आयु वर्ग में 9%, 5-9 वर्ष में 11% 10-14 आयु वर्ग में 12% जनसंख्या है जैसे-जैसे जन्म दर में गिरावट आयेगी वैसे-वैसे 0-4 वर्ग में कमी होगी जिसका परिणाम 0-14 आयु वर्ग के अन्य उप वर्गो पर भी पड़ेगा।

यह आयु वर्ग एक निर्भर जनसंख्या है यद्यपि सामाजिक आर्थिक कारणो से इस वर्ग का 3-4% जनसंख्या कार्यशील है जो बाल मजदूरी के रूप में दिखायी पड़ती है। युवा एवं प्रौढ़ जनसंख्या लगभग 60% है। इनमें युवा आयु वर्ग [illegible] (15-39) में 42% जनसंख्या तथा प्रौढ़ आयु वर्ग (40-64) में 18% जनसंख्या आती है इनमें 15-39 आयु वर्ग के लोग अधिक कियाशील है कार्यशील जनसंख्या का 58% आपूर्ति इसी वर्ग से होती है। इसमें भी 15-19 आयु वर्ग के लोग निर्भर जनसंख्या के अन्तर्गत रखे जा सकते हैं क्योंकि इनकी उत्पादकता काफी कम है 15-39 आयु वर्ग जैविक रूप से पुनरुत्पादक वर्ग है। प्रौढ़ [illegible] आयु में 40-64 आयु वर्ग के लोग आते है, [illegible] वृद्धि आयुवर्ग (64+) है जो 8% जनसंख्या आती है।

लिंगानुपात का अर्थ समझाइए
Explain the Meaning of Sex Ration

इसका तात्पर्य किसी जनसंख्या के सभी आयु वर्गों में स्त्रियों व पुरुषों के अनुपात से है। किसी प्रदेश के सामाजिक-आर्थिक दशाओं को समझने व प्रादेशिक विश्लेषण के लिए यह एक महत्वपूर्ण सूचकांक है। लिंगानुपात किसी विशिष्ट समय पर किसी देश स्थान या जाति विशेष के स्त्री तथा पुरुष की संख्या के बीच अनुपात को प्रदर्शित करता है। इस अनुपात की गणना करने के लिए स्त्रियों की संख्या में पुरुषों की संख्या से भाग देकर प्राप्त भजनफल को 1000 से गुणा कर दिया जाता है

$$\text{Sex Ration} = \frac{F}{M} \times 1000$$

F = स्त्रियों
M = पुरुष

किसी प्रदेश में इनके अध्ययन के द्वारा वहां की जनसंख्या वृद्धि दर, विवाह दर, व्यवसायिक संरचना जैसे जनांकिकी कारकों की जानकारी मिलती है। सामान्य रूप से लिंगानुपात को प्रति हजार पुरुषों में स्त्रियों की संख्या ज्ञात किया जाता है भारत 1901 में लिंगानुपात 972/1000 था 1951 में 945/1000 हो गया जबकि 2011 में यह 943/1000 अर्थात सामान्य रूप से लिंगानुपात में घटने की प्रवृत्ति है यद्यपि 2001 जनगणना में 933/1000 की अपेक्षा 2011 में थोड़ा वृद्धि हुई।

साक्षरता से क्या आशय है?

साक्षरता का आशय जो किसी भी भाषा में पढ़ने के साथ-साथ लिखने में भी सक्षम हो एवं जिनकी उम्र 7 वर्ष या अधिक हो अर्थात साक्षर उसे कहा जाता है जो 7 वर्ष से अधिक उम्र का कोई भी व्यक्ति किसी भी भाषा में पढ़ एवं लिख सके साथ ही सामान्य गणितीय जोड़-घटाना का समझ हो तो उसे साक्षर कहा जाता है। वस्तुतः साक्षर व्यक्ति को जागरूक व शिक्षित बनाना अपेक्षाकृत सरल होता है इससे उनकी कार्यिक दक्षता में वृद्धि होती है तथा उनका संसाधनात्मक महत्व बढ़ता है भारत मध्यम साक्षरता वाले देशों में आता है।

यहां 2011 के आंकड़े के अनुसार 74.04% साक्षरता था जिसमें महिला साक्षरता दर 65.46% तथा पुरुष साक्षरता दर 82.14% है। प्रौढ़ शिक्षा के माध्यम से देश में 7 करोड़ लोगों को साक्षर बनाया गया। जिसमें 6 करोड़ महिलाएं हैं अभी भी $\frac{1}{4}$ भाग जनसंख्या निरक्षर है इससे उनकी कार्यिक क्षमता में गिरावट आ जाती है सामान्य तौर पर केरल, मिजोरम व लक्षद्वीप में साक्षरता दर 90% से अधिक है जबकि बिहार, झारखण्ड, उत्तरप्रदेश, जम्मू-कश्मीर व अरुणाचल प्रदेश में यह 70% से भी कम है।

नगरीकरण की अवधारणा।
Concept of urbanization

नगर या शहर किसी क्षेत्र विशेष के भौतिक विकास और सांस्कृतिक प्रगति के सूचक होते हैं। इस प्रकार नगरीकरण के अन्तर्गत परिवर्तन की सम्पूर्ण प्रक्रिया और उन परिणामो को शामिल किया जाता हैं जो कृषि अर्थव्यवस्था से औद्योगिक अर्थव्यवस्था में बदलने पर तथा लघु अनुकूल समाज से प्रतिकूल महानगरीय समाज में परिवर्तन होने से उत्पन्न होती हैं।
सामाजिक रूप से ग्रामीण जनसंख्या से नगरीय जनसंख्या में परिवर्तन की प्रक्रिया को नगरीयकरण कहा जाता हैं। ग्रामीण जनसंख्या की अपेक्षा नगरीय जनसंख्या में तीव्र वृद्धि का मुख्य कारण गांवो से नगरो की ओर प्रवास हैं।
नगरीकरण मुख्यत: दो बातो पर निर्भर करता हैं।
1- नगरीय बस्तियों में रहने वाले लोगो की संख्या में वृद्धि
2- गैर कृषि व्यवसाय में संलग्न लोगो की संख्या में वृद्धि
आजादी के बाद भारत में नगरीकरण की तीव्र वृद्धि देखी गयी जिसका मुख्य कारण ग्रामीण - नगरीय स्थानान्तरण रहा है। यद्यपि अनेक नए नगर भी बसे हैं जो अपनी कार्य स्थल विशेषताओं के आधार पर आकर्षण का केन्द्र बने हैं।
भारत में नगरीयकरण 1901 में 2.55 करोड़ थी जो 2011 के जनगणना के अनुसार यह बढ़कर 37.71% करोड़ हो गयी है अत: वर्तमान में देश की कुल जनसंख्या का 31.16% भाग नगरो में रहता हैं पिछले 110 वर्षो में नगरीकरण में 15 गुना की वृद्धि हुई हैं। इस प्रकार विश्व के कम नगरीकृत देशो की श्रेणी में आता हैं। विश्व की लगभग 52% जनसंख्या नगरी है। गोवा भारत का सर्वाधिक नगरीकृत राज्य है जहां पर नगरीकरण 62.17% है।

भारत में नगरीकरण की समस्याएं —

जनसंख्या की यह अत्यधिक वृद्धि पर अनेक सामाजिक आर्थिक तथा पर्यावरण समस्याओं का कारण हैं भारतीय नगरीकरण की कुछ प्रमुख समस्याएं है—

1- स्थान की कमी —
बढ़ती जनसंख्या के कारण आवास आदि हेतु अधिक स्थान की आवश्यकता होती हैं जो भौतिक तथा भौगोलिक दबाव के कारण आसानी से उपलब्ध नहीं होती हैं। जब नगरो की वृद्धि होती हैं तो ग्रामीण क्षेत्रों में कॉलोनियां बनने लगती हैं। इससे प्रमुख खेतिहर भूमि भारी दबाव पड़ता हैं तथा बढ़ती हुई जनसंख्या के लिए इस भूमि पर अतिक्रमण होता हैं।

2 निवास के लिए मकानो की अपर्याप्तता —
विकासशील देशो में नगरीय जनसंख्या की तीव्र वृद्धि हो रही हैं। जिससे मकानो की कमी हो रही हैं एक अनुमान के अनुसार भारतीय नगरो में प्रति वर्ष लगभग 1.7 मिलियन मकानो की कमी हो रही है।

3 सामाजिक सुख सुविधाओं की कमी — आवास, बिजली, पानी परिवहन, सफाई का प्रबन्ध, गन्दे पानी की हटाने का प्रबन्ध शैक्षणिक संस्थान, अस्पताल, उद्यान खेल के मैदान, मनोरंजन की सुविधाओं पर अधिक भार पड़ता है।

4 प्रदूषण — नगरो की बढ़ती भीड़ उद्योग तथा भारी वाहनो की संख्या में वृद्धि होती हैं जिससे पर्यावरण की गुणवत्ता में गिरावट आती हैं यह वायु, जल, ध्वनि तथा अपशिष्ट पदार्थ के प्रदूषण के कारण उत्पन्न हुई है।

5 परिवहन की समस्या — परिवहन मार्ग विरोध और भीड़-भाड़ भारतीय नगरो की प्रमुख समस्या हैं जिससे दिन-प्रतिदिन दुर्घटना बढ़ती जा रही हैं।

शिशु-मृत्यु दर (Infant Mortality Rate) IMR

शिशु मृत्यु से तात्पर्य आयु के प्रथम वर्ष की मृत्युओं से है। यह वर्ष जीवन तालिका को सर्वाधिक प्रभावित करने वाला वर्ष होता है क्योंकि वृद्धावस्था को छोड़कर सामान्यत: इस वर्ष में होने वाली मृत्युओं की संख्या आयु के किसी अन्य वर्ष की अपेक्षा अधिक ही होती है। सामान्यतया जीवन के प्रथम एक वर्ष तक मृत्यु का जोखिम सबसे अधिक होता है। शिशु मृत्यु दरें समाज की सामान्य स्वास्थ्य एवं दशाओं की सर्वश्रेष्ठ सूचकांक मानी जाती हैं। शिशु मृत्यु दर जितनी कम होगी, जीवन स्तर और जनस्वास्थ्य उतना ही अच्छा होगा तथा प्रजनन दर भी कम होगी क्योंकि वहां बच्चे के जीवित रहने की सम्भावना भी अधिक होती है।

जहां शिशु मृत्यु दर अधिक होती है वहां प्रजनन दर भी ऊंची होती है क्योंकि दम्पत्ति विशेष को सहजता से विश्वास नहीं हो पाता कि उसका बच्चा जीवित रहेगा। शिशु मृत्यु दर ज्ञात करने के लिए जीवन के प्रथम वर्ष में हुई मृत्यु दर को उस काल विशेष में हुए जन्मों से भाग किया जाता है। जो प्राप्त संख्या को शिशु मृत्यु दर कहा जाता है।

$$\text{शिशु मृत्यु दर (IMR)} = \frac{\text{किसी निश्चित वर्ष और क्षेत्र में एक वर्ष से कम आयु वाले बच्चों की मृत्यु संख्या}}{\text{उसी वर्ष व क्षेत्र में सजीव जन्मे शिशुओं की संख्या}} \times 1000$$

प्रवास का महत्व
Importance of Migration

प्रवास का आशय मानव समुदाय के एक भौगोलिक इकाई से दूसरी भौगोलिक इकाई में प्राकृतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक आदि कारकों के कारण स्थानान्तरण से है। आदि काल से ही मानव घुमन्तू प्रवृत्ति का रहा है। वह भूमि एवं साधनों की खोज हेतु महामारियों, युद्ध, अत्याचार, भेदभाव के कारण तथा उन्नत जीवन की आशा में एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाकर बसता है लम्बे समय तथा स्थायी रूप से जाने को ही देशान्तर कहा जाता है।

प्रवास या देशान्तरण एक महत्वपूर्ण जनांकिकी घटना है जो जनसंख्या के आकार, वितरण तथा संरचना को शीघ्र प्रभावित करता है प्रजननशीलता तथा मृत्यु जनसंख्या को बहुत ही धीमी गति से प्रभावित करते हैं। ~~प्र~~ प्रवास एक आकस्मिक घटना है जिसमें किसी प्रकार की निश्चितता नहीं होती है तथा इसका मापन तथा अनुमान लगाना सम्भव नहीं है। यदि व्यक्तियों का एक बड़े समूह का एक साथ स्थानान्तरण हो जाय तो इससे देश की सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था, सामाजिक एवं सांस्कृतिक व्यवस्था में खलबली मच जाती है यह सम्भवत संस्कृति, आचार विचार तथा जनसंख्या की संरचना आदि में परिवर्तन ला देती है। मनुष्य एक स्थान से दूसरे स्थान को आता-जाता रहता है; जिसके परिणामस्वरूप उसका सामान्य निवास बदल जाता है। मनुष्य के निवास-स्थान के परिवर्तन की इस घटना को देशान्तरण कहते हैं।

प्रवास को प्रभावित करने वाले घटक
factor affecting migration

देशान्तर या प्रवास को प्रभावित करने वाले प्रमुख प्रमुख भाग है -

1- आकर्षक कारण (push factor) इसमें देशान्तर के आकर्षक कारण का अर्थ जब मनुष्य को अपने निवास स्थान को छोड़कर दूसरे जगह बसने को प्रोत्साहित होता है तो इसमें वह देखता है कि रोजगार एवं व्यवसाय के श्रेष्ठ अवसर, शिक्षा एवं आवास सुविधा, मनोरंजन के साधनो का उपलब्धता, स्वस्थ्य जलवायु, उन्नत नगरीय जीवन आदि के कारण जाता है

2- प्राकृतिक कारण :- प्राकृतिक या भौगोलिक कारणो से प्रायः लोग प्रवास करते हैं इसमें जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक प्रकोप बाढ़, सूखा, दुर्भिक्ष, भूकम्प, महामारी आदि घटनाओ के कारण प्रवास प्रोत्साहित होती है।

3 आर्थिक कारण - कृषि योग्य भूमि का अभाव, खाद्य सामग्री का अभाव के कारण मानव प्रवास के लिए बाध्य होता है। औद्योगिकरण, परिवहन के साधन आदि प्रमुख कारण है

4- राजनीतिक कारण - अनेक प्रकार के राजनीतिक निर्णयो के लोग प्रवास के लिए बाध्य हो जाते हैं। इसमें औद्योगिक बढ़वा से गांव से शहर की ओर गतिशीलता बढ़ती है कभी - कभी राजनीतिक निर्णयो युद्ध के कारण लोग स्थान बदलने लगते हैं और शांति स्थानो की ओर पलायन करते है। जैसे भारत - पाकिस्तान बंटवारा, जर्मनी एवं रूस में युद्ध आदि

5- सामाजिक कारक - सामाजिक रिति - रिवाज तथा परम्पराएं भी उत्तरदायी होती हैं जैसे विवाह के उपरान्त लड़कियां अपने पति के घर चली जाती है, संयुक्त परिवार में कलह के कारण, बच्चों के शिक्षा एवं स्वास्थ्य के लिए प्रवास करते है।

6 धार्मिक तथा सांस्कृतिक कारण

7 जनांकिकी कारण आदि।

जनसंख्या घनत्व स्पष्ट कीजिए
Explain the Density of Population

किसी देश में निवास करने वाले मनुष्यों की संख्या और सम्बंधित देश के क्षेत्रफल के पारस्परिक अनुपात को जनसंख्या का घनत्व कहा जाता हैं अन्य शब्दों में जनसंख्या घनत्व एक सरल अनुपात हैं जो किसी क्षेत्र विशेष की जनसंख्या को उस क्षेत्र विशेष के क्षेत्रफल से भाग देने पर प्राप्त होता हैं वह जनसंख्या का घनत्व किसी क्षेत्र विशेष में जनसंख्या का दबाव का द्योतक हैं अर्थात् प्रति वर्ग किलोमीटर में रहने वाले जनसंख्या को जनसंख्या घनत्व कहा जाता हैं।

$$\text{जनसंख्या घनत्व} = \frac{\text{सम्पूर्ण क्षेत्र की जनसंख्या}}{\text{उस क्षेत्र का क्षेत्रफल}}$$

$$DP = \frac{P}{A}$$

जनसंख्या घनत्व को मनुष्य भूमि - अनुपात भी कहा जाता हैं इसके द्वारा किसी भी देश, स्थान, क्षेत्र पर मनुष्य के भार को ज्ञात किया जाता हैं भारत में सर्वाधिक जनसंख्या घनत्व वाला राज्य बिहार हैं जहां 1106 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी में रहते हैं जबकि भारत का जनसंख्या घनत्व 2011 के आकड़े के अनुसार 382 हैं जबकि सबसे कम जनसंख्या घनत्व वाला भारत का राज्य अरुणाचल प्रदेश हैं। सर्वाधिक जनसंख्या घनत्व राज्य बिहार, पं० बंगाल, केरल, उत्तर प्रदेश एवं हरियाणा प्रमुख राज्य हैं।

प्रजननशीलता का अर्थ
Meaning of Fertility]

सामान्यतः प्रजननशीलता का अर्थ किसी स्त्री या किसी समूह स्त्री द्वारा किसी समय विशेष में कुल से जीवित जन्मे बच्चों की वास्तविक संख्या से है। यदि कभी भी किसी स्त्री ने किसी बच्चे को जन्म दिया है तो उसको प्रजननशील स्त्री कहा जाता है। इस तरह प्रजननशीलता की माप किसी समय विशेष में जीवित जन्मे बच्चो की आवृत्ति से ही की जा सकती है।

प्रजननशीलता तथा सन्तानोत्पादकता में अन्तर होता है सन्तानोत्पादक शक्ति से तात्पर्य किसी स्त्री में बच्चो को जन्म देने की शक्ति से है चाहे उसने बच्चों को जन्म दिया हो अथवा न दिया हो। इस प्रकार वे स्त्रियां जिनमें सन्तानोत्पादन शक्ति है उन्हे प्रजनन योग्य कहा जाता है। इसके विपरित प्रजननशीलता से आशय वास्तव में बच्चों को जन्म देने से है प्रजननशक्ति को तो जन्मो के आकड़ो की सहायता से मापा जा सकता है। प्रो० थामस एवं लेविस के शब्दो में "जनसंख्या विषय के अधिकांश विद्यार्थी प्रजनशीलता शब्द का प्रयोग स्त्री या स्त्रियों के एक समूह द्वारा जनित बच्चों की वास्तविक संख्या के लिए करते हैं जबकि सन्तानोत्पादकता वह शारीरिक क्षमता होती है जिससे स्त्रियां गर्भाधारण के योग्य होती है स्त्रियों में से कितनी प्रजनन के लिए सक्षम हैं और कितनी नहीं इसका निश्चित माप कर पाना कठिन है।"

अशोधित मृत्यु दर (Crude Death Rate) CDR

अशोधित मृत्यु दर, मृत्यु दर मापने की सबसे सरल और लोकप्रिय विधि हैं यह किसी वर्ष विशेष में पंजीकृत हुई, मृत्युओ से सम्पूर्ण जनसंख्या के अनुपात को दर्शाती हैं, दूसरे शब्दो में किसी दिए हुई वर्ष के लिए अशोधित मृत्यु दर हमे यह बताती हैं कि उस वर्ष विशेष में होने वाली मृत्युओ ने जनसंख्या को किस दर से कम किया है। इसे मृत्यु प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष के द्वारा भी पुकारा जाता हैं लेकिन इसे प्रति हजार के रूप में व्यक्त किया जाता है।

अशोधित मृत्यु दर को ज्ञात करने के लिए किसी काल विशेष में हुई कुल मृत्युओं को मध्यवर्षीय जनसंख्या से भाग दे दिया जाता हैं इस प्रकार प्राप्त भजनफल को 1000 से गुणा करने पर जो राशि प्राप्त होती हैं उसे अशोधित मृत्यु दर प्रति हजार कहा जाता है।

$$\text{अशोधित मृत्यु दर} = \frac{\text{कुल मृत्युओं की संख्या}}{\text{मध्यवर्षीय जनसंख्या}} \times 1000$$

$$CDR = \frac{\Sigma D}{\Sigma P} \times 1000$$

प्रो० डेविड एम. हीर ने कहा है कि "इसे उस अनुपात के रूप में परिभाषित किया जा सकता हैं जो किसी दी हुई जनसंख्या में किसी वर्ष विशेष में हुई मृत्युओं तथा उसी वर्ष के मध्य की जनसंख्या के बीच होता हैं।"

2023 में देश में भारत में अशोधित मृत्यु दर 6.4 रही हैं। सर्वाधिक छत्तीसगढ़ में यह 8.9 जबकि कम दिल्ली में 4.3 हैं।

~~मातृ~~ मातृत्व मृत्यु दर (Maternal Mortality Ratio) MMR

मातृत्व मृत्यु दर से आशय शिशु जन्म के कारण हुई स्त्रियों की मृत्यु दर से है। इसकी गणना के लिए शिशु जन्म के कारण होने वाली स्त्री मृत्यु की संख्या को कुल शिशु जनसंख्या की से विभाजित कर दिया जाता है।

मातृत्व मृत्यु दर = किसी निश्चित वर्ष व क्षेत्र में प्रजनन योग्य आयु वर्ग की स्त्रियों की शिशु जन्म के कारण हुई मृत्यु की संख्या

$$\text{मातृत्व मृत्युदर (MMR)} = \frac{\text{किसी निश्चित वर्ष व क्षेत्र में प्रजनन योग्य आयु वर्ग की स्त्रियों की शिशु जन्म के कारण हुई मृत्यु की संख्या}}{\text{उसी वर्ष व क्षेत्र में जन्मे शिशुओ की संख्या}} \times 1000$$

मातृ मृत्युदर प्रति एक लाख जीवित जन्मो पर प्रसव के दौरान या गर्भ खतम होने के 42 दिनो के भीतर प्रसव के कारण मरने वाली माताओ (15 वर्ष से 49 वर्ष आयु की स्त्री) की संख्या को मातृ मृत्यु दर (MMR) कहा जाता है। 2019 के आकड़े के अनुसार भारत में प्रति लाख जीवित जन्मो पर मातृ मृत्यु दर 93 है। अर्थात एक लाख जीवित जन्मो पर 93 महिलाए की मृत्यु हो जाती है।

मृत्यु के कारण स्पष्ट कीजिए या मरणशीलता के कारण :-

Explain the causes of Death

21वीं सदी के इस युग में औषधि विज्ञान और चिकित्सा विज्ञान ने नए-नए अनुसंधानों एवं अन्वेषणों के द्वारा कि विभिन्न प्रकार के जटिल रोगों के कारणों का पता लगा कर उसके उनके उपचार का प्रयास जारी है। लेकिन मृत्यु के तब पर भी अनेक कारण है -

1- कुपोषण :- मृत्यु एवं अस्वस्थता का सबसे प्रमुख कारण कुपोषण है गरीबी एवं आर्थिक दृष्टि से पिछड़े देशों में कुपोषण की समस्या व्यापक विद्यमान है। इनमें 5 वर्ष के कम आयु के बच्चों की होने वाली मृत्यु में से लगभग 50% मृत्यु प्रोटीन की कमी से होती है। कुपोषण प्रायः गरीबी, भोजन सम्बन्धी आदतें, धार्मिक रूढ़िता, अज्ञानता आदि के कारण मानव कुपोषण का शिकार बन जाता है।

2 बीमारियों - कुपोषण के कारण शरीर अनेक बीमारी घर बन जाता है जिससे जल्द ही मृत्यु के काल में चले जाते है। इनमें कैंसर, श्वसन, तन्त्रीय बीमारी, मधुमेह, हिंसा से मृत्यु आदि के कारण मृत्यु है।

3 पर्यावरण सम्बन्धी दशाएं :- इसके अन्तर्गत आवास व्यवस्था, पेय पेय जल, वायु, मल विसर्जन, कूड़ा सफाई सम्बन्धी व्यवस्था के कारण अनेक रोग जनित होते है जैसे चेचक, हैजा, टी.बी., कालरा, मलेरिया, डेंगू आदि।

4 चिकित्सा सुविधाओं का अभाव - आज के इस तकनीकी युग में भी अनेक दुर्गम क्षेत्रों में उपचार का अभाव है दूर-दराज बस्तियों में अभी भी चिकित्सा का अभाव बना हुआ है।

5- सामाजिक एवं आर्थिक कारण - किसी देश में सामाजिक एवं आर्थिक कारण जैसे गरीबी, बेरोजगारी, अशिक्षा, पर्दाप्रथा, विवाह पद्धति रीति रिवाज आदि

जीवन प्रत्याशा का अर्थ या
जीवन :--- प्रत्याशा से आशय।
Explain the Life Expectancy

जन्म के समय किसी नवजात शिशु के जितने वर्ष तक जीवित रहने की उम्मीद की जाती है वह उस शिशु की जन्म के समय जीवन प्रत्याशा कही जाती है। किसी देश में जीवन प्रत्याशा वहां के निवासियों की स्वास्थ्य दशा पर निर्भर करती है जिन देशों में मृत्यु दर अधिक होती है वहां के निवासियों की जीवन प्रत्याशा बहुत ही कम होती है और ज्यों - ज्यों मृत्यु दर कम होती जाती है, औसत प्रत्याशित आयु बढ़ती जाती है। वर्तमान शताब्दी में प्रायः विश्व के बहुत से देशों में जीवन प्रत्याशा बढ़ी है। भारत में भी जन्म के समय जीवन प्रत्याशा में क्रमशः वृद्धि हो रही है। भारत की जीवन प्रत्याशा वैश्विक औसत से 70 से कम है। जहां भारत में जीवन प्रत्याशा 69.65 वर्ष है जबकि पुरुष 68 वर्ष महिला 74 वर्ष तक है। 1881 में पुरुष जीवन प्रत्याशा 23 वर्ष जबकि महिला जीवन प्रत्याशा 25 वर्ष था 1911 में पुरुष 22.59 वर्ष जबकि महिला 23.31 वर्ष थी 1911 के बाद भारत में जीवन प्रत्याशा में द्रुत गति से वृद्धि हुई जो आज बढ़ी हुई देखी जाती है। लेकिन विश्व के मुकाबले भारत की जीवन प्रत्याशा आज भी बहुत कम है। यूरोप के अधिक देश की जीवन प्रत्याशा 70 वर्ष से अधिक है

जनसंख्या घनत्व को प्रभावित करने वाले प्रमुख घटक क्या है?

What are the major factors affecting population density?

जनसंख्या घनत्व को प्रभावित करने वाले कोई एक घटक नहीं है बल्कि अनेक ऐसे घटक है जो किसी देश की जनसंख्या घनत्व को प्रभावित करती हैं।

1- अनुकूल जलवायु :- किसी देश की जनसंख्या की जलवायु तथा जनसंख्या घनत्व में घनिष्ठ सम्बन्ध होता है और किसी स्थान की जलवायु स्वास्थ्यप्रद एवं अनुकूल होती है वहां जनसंख्या अधिक बसती है। अनुकूल जनसंख्या से जलवायु से अधिक व्यक्तियों के जीवन निर्वाह की क्षमता पायी जाती हैं प्रतिकूल जलवायु में वहां पर जनसंख्या का बसाव कम पाया जाता है।

2 वर्षा की मात्रा - जहां वर्षा उचित समय पर उचित मात्रा में होती हैं वहां पर खाद्यान्नों आदि की उत्पादन क्षमता अधिक होती है और वे स्थान घनी आबादी वाले होते है। इनके विपरीत असामायिक वर्षा वाले स्थानो में खाद्यान्न उत्पादन में कठिनाई होती है जिससे जन बसाव कम पाया जाता है।

3- भूमि की प्राकृतिक बनावट - जो क्षेत्र पर्वतीय एवं घाटियों से भरा होता है वहां मिट्टी ऊबड़-खाबड़, जंगलो से ढकी पथरीली तथा कम उपजाऊ होती हैं वहां जनघनत्व कम पायी जाती है। इसके विपरीत मैदानी एवं समतल क्षेत्रों में अधिक जन बसाव पाया जाता है।

4 जीवन एवं सम्पत्ति सुरक्षा - जहां पर उपद्रव, जान-माल का नुकसान, शांति होता है वहां अधिक लोग बसते है। जहां पर सदैव असुरक्षा का भय वातावरण रहता है वहां पर लोग कम मात्रा में बसते है।

5- आर्थिक विकास :-

अशोधित जन्म दर (Crude Birth Rate) CBR
यह प्रजननशीलता की सबसे सहज विधि है यह किसी वर्ष विशेष में जन्मे कुल बच्चो की संख्या तथा उस वर्ष की कुल जनसंख्या के मध्य अनुपात को व्यक्त करता हैं प्रायः इसे प्रति हजार में व्यक्त किया जा सकता है अशोधित जन्म दर को ज्ञात करने के निम्न सूत्र है -

$$\text{अशोधित जन्म दर} = \frac{\text{किसी वर्ष विशेष में किसी दिये गये क्षेत्र में जन्मे बच्चों की संख्या}}{\text{उस वर्ष विशेष में क्षेत्र विशेष की कुल जन संख्या}} \times 1000$$

$$CBR = \frac{B}{P} \times 1000$$

B = वर्ष विशेष में कुल जन्मे बच्चों की संख्या
P = उस वर्ष विशेष में क्षेत्र की कुल जनसंख्या

इसको अशोधित दर इसलिए कहा जाता है क्योंकि इसकी गणना करते समय किसी भी समुदाय की जनसंख्या के गठन अर्थात आयु और लिंग आदि के अन्तरो को ध्यान में नहीं रखा जाता हैं. इसका सबसे अधिक प्रयोग वर्तमान प्रजननदर को अभिव्यक्त और उसका जनसंख्या वृद्धि पर प्रभाव देखने के लिए किया जाता हैं तथा जब कभी अशोधित जन्म दर में से अशोधित मृत्यु दर को घटा दिया जाता हैं तो इससे जनसंख्या के विकास की दर को ज्ञात किया जा सकता हैं

कुल प्रजनन दर से आप क्या समझते है।
What is Total Fertility Rate (TFR)

कुल प्रजनन दर या TFR बच्चों की वह संख्या है जो किसी भी स्त्री के सम्पूर्ण प्रजनन काल में उत्पन्न होते हैं यदि किसी स्त्री के पूरे प्रजनन काल में कुल तीन बच्चें पैदा होते हैं तब उस स्त्री की कुल प्रजनन दर =3 है। इसी तरह यदि 3000 स्त्रियों के ~~अनेक~~ उनके सम्पूर्ण प्रजनन काल में 12000 बच्चे पैदा होते है तो

$$TFR = \frac{12000}{3000} = 4 \text{ प्रति स्त्री हुआ}$$

TFR बच्चो की वह संख्या जो किसी भी स्त्री के सम्पूर्ण प्रजनन काल (15-49 वर्ष) में पैदा हो यदि TFR का मूल्य दो कम आये तो जनसंख्या के घटने की प्रवृत्ति होगी यदि TFR दो आये तो इसका अर्थ हुआ कि जनसंख्या में कोई भी वृद्धि नहीं होगी अर्थात माता-पिता अपने आप को ही प्रतिस्थापित कर रहे हैं TFR के स्तर को प्रतिस्थापन प्रजनन दर कहते हैं

मरणशीलता या मृत्युक्रम से आशय
Explain the Mortality

मृत्यु एक निश्चित घटित होने वाली महत्वपूर्ण जैविकीय घटना है जिसके अन्तर्गत जीवित जन्मे व्यक्ति विशेष में निहित जीवशास्त्रीय शक्ति का अन्त हो जाता है मृत्यु एक दीर्घकालीन जीवन व्यतीत करने के उपरान्त व्यक्ति विशेष में निहित जैविकीय शक्ति की समाप्ति का सूचक है। इसमें निरन्तर कार्यरत शरीर के आवश्यक अवयव कार्य करना बंद कर देते हैं। मृत्यु निश्चित एवं अडिग है चाहे विज्ञान कितना भी तरक्की कर ले यह कभी शून्य नहीं हो सकता है।

मृत्यु की सम्भावना प्रत्येक आयु वर्ग में सदैव बनी रहती है सामान्य दशा में एक निश्चित आयु तक जीवित रहने की सम्भावना भिन्न-भिन्न देशों एवं समाजों में भिन्न-भिन्न होती है। यह किसी देश की आर्थिक, सामाजिक परिस्थितियों एवं जलवायु आदि पर निर्भर करती है। मृत्यु के बिना किसी भी सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन होना सम्भव नहीं होता है क्योंकि यह पीढ़ियों को परिवर्तित करती रहती है जो अपने अनुसार समाज में परिवर्तन लाते रहते हैं। जैसे ही किसी व्यक्ति के मृत्यु के बाद दूसरे के हाथ में सत्ता आती है वह अपनी पूर्व निहित अवधारणाओं एवं परिकल्पनाओं के आधार पर समाज में परिवर्तन का प्रयास करता है।

शिशु मृत्यु दर के कारण

Causes of Infant mortality

शिशु मृत्यु दर के अनेक कारण है –

1- गरीबी – भारत में ऊँची शिशु मृत्यु दर का प्रमुख कारण अति गरीबी है; अधिकांशतः माता-पिता गरीब है जो अपने बच्चो को उचित पौष्टिक पोषण देने में असमर्थ हैं इससे बच्चे शारीरिक रूप से अत्यधिक दुर्बल हो जाते है यहां पर अंध विश्वास के कारण जो दूध बच्चो के खुराक होने चाहिए उसे धर्म के नाम पर गंगा या अन्यत्र बहा दिया जाता है। यदि इन्हे गरीब बच्चों में प्रति दिन मुफ्त बांटा जाय तो नवजात बच्चो के विकास में महती भूमिका निभा सकती है।

2 प्रसव सम्बधित कारण :- कम आयु मे विवाह और मातृत्व की अज्ञानता, कुशल दाईयों एवं जच्चा-बच्चा केन्द्र तथा प्रसव सुविधा का अभाव जिससे आने वाले नवजात के मृत्यु की सम्भावना अधिक बढ़ जाती है।

3- शिशुओं की स्वास्थ्य सम्बन्धी :- ग्रामीण क्षेत्रो में शिशुओं के स्वास्थ्य सम्बन्धी सुविधाओं का अभाव रहता है। शिशुओं के बीमारीयों के टीकाकरण, स्वास्थ्य एवं सफाई का अभाव जो अशिक्षित होने के कारण शिशु की मृत्यु की सम्भावना अत्यधिक बढ़ जाती है।

4 माता-पिता का अज्ञानता :- आज भी अंधविश्वास एवं जादू टोना जैसे कुरीतियों के वजह से समाज में अधिकांश बीमारियों का इलाज झाड़-फूंक द्वारा करने का प्रयास करते हैं।

5- अवांछित मातृत्व :- कम आयु में विवाह से शीघ्र माता बनने या बार-बार मां बनने से बीमारी आ जाती है

जनसंख्या एवं आर्थिक विकास
Population and Economic Development

किसी देश के राष्ट्रनिर्माण एवं आर्थिक विकास में वहां की जनसंख्या महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। साथ ही किसी देश के आर्थिक विकास उस देश की जनसंख्या पर भी महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। इस प्रकार जनसंख्या तथा आर्थिक विकास के स्तर में प्रत्यक्ष एवं परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध होता है प्रत्येक देश का उत्पादन स्तर, आर्थिक विकास की दर, राष्ट्रीय तथा प्रति व्यक्ति आय, देश में उत्पादन क्रियाओं का संचालन, रहन सहन का स्तर आदि सभी दशाएं उस देश की जनसंख्या के आकार एवं वितरण पर निर्भर करती हैं मानव ही वह शक्ति है जो प्राकृतिक संसाधनो को अपनी कुशलता, एवं बौद्धिक दक्षता द्वारा गतिशील बनाता है। तथा विकास का मार्ग प्रशस्त करता है।

मार्क्स का कथन है कि आर्थिक विकास के सभी प्रयासो केन्द्र बिन्दु मानव विकास होता है तथा मनुष्य ही समस्त उत्पादन का कारण है। वह ही केवल उत्पादन का साधन है प्रो० रोस्टोव के अनुसार "आर्थिक विकास एक ओर पूंजी व कार्यशील शक्ति में वृद्धि की दरें के मध्य और दूसरी तरफ जनसंख्या वृद्धि की दर के मध्य एक ऐसा सम्बन्ध है जिससे कि प्रति व्यक्ति उत्पादन में वृद्धि होती है।" मानव संसाधन आर्थिक विकास के संसाधनो की अपेक्षा अधिक महत्व है आज नए-नए संसाधनो की खोज, गगनचुम्बी इमारतें, विशाल फैक्ट्री, पर्वतो का छेदन, सागर, अन्तरिक्ष बांध, सड़क पुल आदि का निर्माण मानव का कार्य कुशलता से ही हो रहा है।

जनसंख्या शिक्षा का आशय
Meaning of Population Education.

जनसंख्या शिक्षा अत्यधिक जनसंख्या वृद्धि से उत्पन्न गम्भीर समस्याओं के संदर्भ में विस्तृत जानकारी, सोच तथा जागरूकता उत्पन्न करती है जनसंख्या शिक्षा से व्यक्ति स्वयं अपने परिवार, समाज, देश के प्रति अपने उत्तरदायित्व को समझते हुए अपने परिवार के आकार को व्यवस्थित एवं नियमित करने के प्रति जागरूक हो सकता है बेलेनसन के अनुसार " जनसंख्या शिक्षा द्वारा जनसंख्या के विषय में जागरूकता व ज्ञान को विकसित किया जाता है साथ ही पारिवारिक जीवन, प्रजनन तथा मूलभूत मूल्यों का भी ज्ञान कराया जाता है।"

जनसंख्या शिक्षा एक शैक्षिक प्रक्रिया है जो विद्यार्थियों को जनसंख्या में वृद्धि के कारणों एवं उसके द्वारा उत्पन्न समस्याओं के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी प्रदान करती है। इसके अन्तर्गत जनसंख्या परिवर्तन के विभिन्न पहलुओं का व्यक्ति, समाज तथा देश पर पड़ने वाले प्रभावों का ज्ञान आगामी दशकों के प्रजनकों को कराने का प्रयास किया जाता है। शिक्षा का उद्देश्य देश की युवा पीढ़ी तथा भावी पीढ़ी को इस बात के लिए पहले से ही तैयार करना है कि वे अपने परिवार के आकार व संतान के विषय में विवेकपूर्ण ढंग से निर्णय ले सके। ऐसी शिक्षा भावी पीढ़ी को प्रजनन दर में कमी लाने हेतु प्रेरित करती है ताकि व्यक्ति, समाज तथा देश का जीवन स्तर ऊँचा उठे तथा देश का सर्वांगीण विकास हो सके।

सामान्य प्रजनन दर से आशय -
Explain the General Fertility Ratio GFR

सामान्य प्रजनन दर (GFR) कुल जीवित जन्मे बच्चो एवं सन्तानोत्पादन योग्य आयु की स्त्रियों की संख्या से सम्बधित है। इस दर की गणना का उद्देश्य गणना को केवल सन्तानोत्पादन योग्य स्त्रियों तक ही सीमित रखना है अर्थात गणना में समस्त पुरुषो को तथा स्त्रियो के उस भाग को जो सन्तानोत्पादन न कर सकने वाली आयु की हैं को शामिल नहीं किया जाता है। सामान्य प्रजनन दर किसी वर्ष विशेष में कुल जीवित जन्मे बच्चों तथा सन्तानोत्पादक आयु वर्ग की प्रति हजार स्त्रियों का अनुपात होता है, जो यह दर्शाता है कि सन्तानोत्पादक आयु वर्ग की स्त्रियों जीवित बच्चो को जन्म देकर किस प्रकार वर्तमान जनसंख्या में वृद्धि करती हैं। प्रो० बेन्जामिन के अनुसार " 15-49 आयु वर्ग की प्रति हजार स्त्रियो द्वारा जन्मित जीवित जन्मों की संख्या ही सामान्य प्रजनन दर है।"

$$\text{सामान्य प्रजनन दर} = \frac{\text{क्षेत्र विशेष में वर्ष भर में सजीव जन्मे बच्चों की संख्या}}{\text{उस क्षेत्र विशेष में सन्तानोत्पादक आयु वर्ग की स्त्रियों की उस वर्ष की संख्या}} \times 1000$$

$$GFR = \frac{B}{FP}$$

सामान्य प्रजनन दर की गणना करते समय इस बात की जानकारी करना महत्वपूर्ण है कि स्त्रियों का प्रजननकाल क्या माना जाय इसके लिए अलग अलग स्थानो के लिए अलग-अलग है कहीं 15-45 वर्ष तो कहीं 15-49 वर्ष है

भारत में जनसंख्या विस्फोट
Population Explosion in India

भारत में जनसंख्या तेजी से वृद्धि हो रहा है जहां पर साधन जनसंख्या के भार को सहन करने में अपने को असहज महसूस कर रहे हैं जनसंख्या की तीव्र वृद्धि से भोजन, वस्त्र एवं आवास की समस्या विकराल होती चली जा रही हैं। भारत की जनसंख्या सम्बंधी स्थिति वास्तव में भयानक है जहां 1901 में जनसंख्या 23.8 करोड़ था वहीं 1951 में 36 करोड़ हो गया जबकि 1991 में यह जनसंख्या 84.6 करोड़ हो गयी जबकि 2011 में यह जनसंख्या बढ़कर 121.08 करोड़ हो गया 2025 में एक आंकड़े के अनुसार विश्व की सबसे अधिक जनसंख्या भारत का हो गयी जिसकी आबादी 140 करोड़ पहुंच चुकी हैं।

भारत की जनसंख्या वृद्धि दर वास्तव में सनसनी पैदा कर देती हैं यहां जनसंख्या की वृद्धि दर भारत के अपने जनांकिकी इतिहास के लिए भी भयानक और अभूतपूर्व हैं। 2001 से 2011 के बीच भारत में 18.18 करोड़ जनसंख्या वृद्धि हुई है भारत का क्षेत्रफल विश्व का क्षेत्रफल का मात्र 2.4% है जबकि जनसंख्या में 17.5% हैं। भारत की जनसंख्या संयुक्त राज्य अमेरिका, इंडोनेशिया, ब्राजील, पाकिस्तान, बंगलादेश एवं जापान की संयुक्त जनसंख्या से अधिक हैं। आजादी से पूर्व तक भारत की जनसंख्या 50 वर्षों में 12.3 करोड़ हो बढ़ी था जबकि 1951 से 2001 के बीच इन 50 वर्षों 66 करोड़ की वृद्धि देखी गयी इस प्रकार भारत की जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ती हुई जनसंख्या विस्फोट का बढ़ चुकी हैं।

माल्थस का जनसंख्या सिद्धान्त
Malthusian theory of population

माल्थस का जनसंख्या सिद्धान्त, जनसंख्या में वृद्धि तथा खाद्यान्न आपूर्ति में वृद्धि के मध्य सम्बन्ध की व्याख्या करता है इस सिद्धान्त का कथन है कि जनसंख्या में जीवन निर्वाह साधनो की अपेक्षा तीव्र गति से बढ़ने की प्रवृत्ति होती है।" यह सिद्धान्त स्पष्ट करता है कि खाद्यान्न पूर्ति की अपेक्षा जनसंख्या में अधिक तेजी से वृद्धि होती है और यदि इस जनसंख्या वृद्धि पर रोक न लगायी गयी तो परिणाम स्वरूप विपत्ति उत्पन्न हो जाती है।

जनसंख्या वृद्धि दर पर यदि नियन्त्रण नही लगाया गया तो जनसंख्या खाद्य पदार्थों की पूर्ति की तुलना अधिक तीव्र बढ़ती है और प्रत्येक 25 वर्ष बाद पहले से दुगनी हो जाती है। और वृद्धि गुणोत्तर या ज्यामितीय श्रेणी में बढ़ती है जैसे 1, 2, 4, 8, 16, 32 आदि क्रम मे जनसंख्या बढ़ती है। जबकि खाद्यान्नो की पूर्ति में वृद्धि दर अंकगणितीय आधार पर जैसे 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7 8 आदि के क्रम में बढ़ती है

माल्थस ने बताया कि प्रकृति सीमित लोगो के लिए मेज लगाया है जो बिना बुलाये आयेगा उसे निश्चय ही भूखा मरना पड़ेगा। इसके जनसंख्या नियन्त्रण का सुझाव दिया जाता है। इसे प्रकृति प्रकोप जैसे भुखमरी, अकाल, युद्ध, बीमारी बाढ़, भूकम्प जैसे बचने के लिए मनुष्य को स्वयं आगे आना होगा।।

जनसंख्या तथा खाद्य सामग्री में असंतुलन

जनसंख्या की अपेक्षाकृत तेज वृद्धि के कारण जनसंख्या तथा खाद्यान्नो की पूर्ति में असंतुलन पैदा हो जाता है जनसंख्या का खाद्यान्नों की पूर्ति के ऊपर आधिक्य अति जनसंख्या का प्रतिक है माल्थस के अनुसार ऐसी असंतुलन की स्थिति में प्रकृति स्वयं कुछ नैसर्गिक ~~प्रतिबंध~~ प्रतिबन्ध जैसे भुखमरी महामारी, भूकम्प, बाढ़, अकाल आदि लगा देती है इससे जनसंख्या में कमी आ जाती है तथा खाद्यान्नो के साथ संतुलन स्थापित कर लेती है लेकिन यह संतुलन स्थायी नहीं है इससे मानव को अत्यन्त दुःख है का जनसंख्या नियन्त्रक सही नहीं है लेकिन जनसंख्या तब पर भी पुन वृद्धि होने लगती है जो पुनः से असंतुलन पैदा हो जाता है

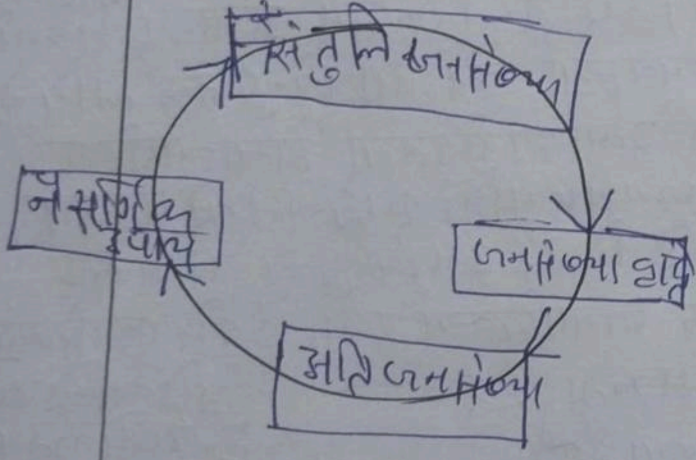

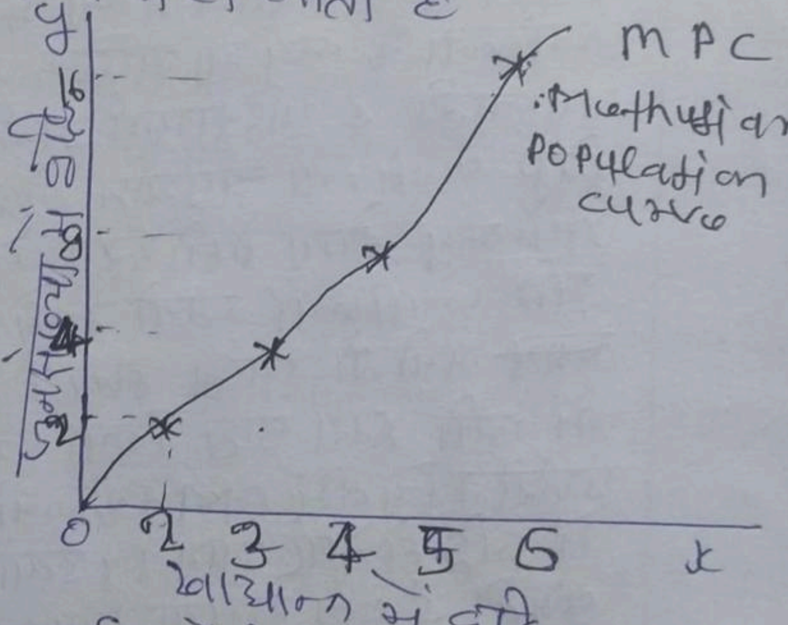

प्रदर्शित चित्र में MPC वक्र दर्शाता है कि जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ती जाती है जो माल्थसजेसन चक्र कहा जाता है जहां जनसंख्या में वृद्धि → अति जनसंख्या → नैसर्गिक उपाय → संतुलित जनसंख्या प्राप्त हो जाती है।

अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धान्त
Theory of optimum population

अनुकूलतम जनसंख्या से आशय उस जनसंख्या से है जो किसी देश में एक निश्चित समय पर दिये हुए साधनो का अधिकतम उपयोग तथा उत्पादन के लिए आवश्यक है जब देश की जनसंख्या का आकार आदर्श (optimum) रहता हैं तो प्रति व्यक्ति आय अधिकतम होती हैं इस प्रकार एक विशेष समय तथा परिस्थितियों में वही जनसंख्या सर्वोत्तम होता है जिसमें प्रति व्यक्ति आय अधिकतम होती है।

प्रो० डाल्टन के अनुसार " अनुकूलतम जनसंख्या वह होती हैं जो प्रति व्यक्ति अधिकतम आय प्रदान करती है।"

एडविन कैनन के अनुसार किसी देश मे एक दिये हुए समय पर अधिकतम उत्पादन का एक बिन्दु आता है जहां पहुंचकर जनसंख्या तथा साधनो का पूर्ण समन्वय हो जाता है इस बिन्दु से जनसंख्या के कम या अधिक होने पर कुल राष्ट्रीय उत्पादन में कमी आ जाती है यदि सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था को उस बिन्दु तक लाने के लिए जनसंख्या अपर्याप्त हो तो उत्पादन जितना होना चाहिए उससे कम होगा ऐसी दशा में जनसंख्या में वृद्धि करनी पड़ेगी यदि जनसंख्या इतनी अधिक है कि वह उस बिन्दु से आगे बढ़ ~~जाए~~ गयी तो इसका अर्थ है कि जनाधिक्य दशा है इसे जनसंख्या में कमी द्वारा प्राप्त किया जा सकता है।

प्रदर्शित चित्र में OM तक जनसंख्या में वृद्धि होने पर आय एवं उत्पादकता बढ़ती है OM अनुकूलतम जनसंख्या है M बिन्दु के बाद जनसंख्या में रोक लगानी चाहिए।

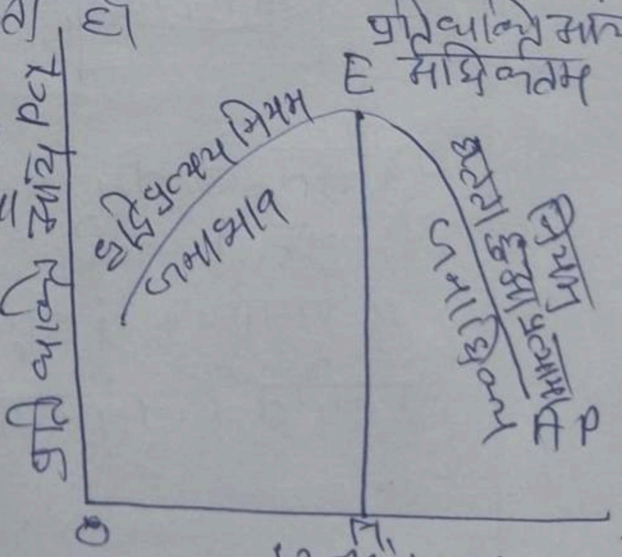

$$M = \frac{A - O}{O}$$

M = धनात्मक जनाधिक्य बताता है

M = ऋणात्मक न्यून जनसंख्या

M = 0 अनुकूलतम जनसंख्या

जनांकिकीय संक्रमण सिद्धान्त
Theory of Demographic Transition

इस सिद्धान्त का प्रतिपादन C.P ब्लैकर, थाम्पसन थे। इनका मत था कि प्रत्येक समाज की जनसंख्या को अनेक अवस्थाओं से जाना पड़ता है प्रायः जनसंख्या प्रत्येक देश जनसंख्या वृद्धि की दृष्टि से तीन अवस्था से होकर गुजरता है जबकि C.P ब्लैकर पाँच अवस्था बतायी हैं।

प्रथम अवस्था :- इसमें जन्म दर एवं मृत्यु दर दोनों ऊँची होती है फलस्वरूप जनसंख्या वृद्धि दर नीची होती है इस अवस्था में कृषि आय का मुख्य स्रोत होता है उद्योग का अभाव रहती है सेवा क्षेत्र का अभाव रहता है बच्चे परिवार के सम्पत्ति समझे जाते है

2 - दूसरी अवस्था - कृषि क्षेत्र से औद्योगिक विकास होने लगता है आय, उपभोग का स्तर, रहन-सहन का स्तर, शिक्षा, चिकित्सा की वृद्धि होती है जिससे मृत्युदर कम होता है जनसंख्या निरन्तर कि वृद्धि के कारण जनसंख्या विस्फोट पाया जाता है।

3 - तीसरी अवस्था - यह अवस्था जन्मदर घट जाती है और मृत्युदर के पास पहुँच जाते है जनसंख्या वृद्धि दर गिर जाते है लोगों की आय में वृद्धि होती है शिक्षा का प्रसार एवं रहन सहन का स्तर में वृद्धि, अंधविश्वास टूट जाता है छोटे-छोटे परिवार होते हो विवाह की आयु बढ़ने लगती है C.P ब्लैकर ने पाँच अवस्था बताया है

A - उच्च स्थिर अवस्था :- जन्मदर-मृत्युदर ऊँचे

B प्रारम्भिक विस्तार अवस्था - उच्च जन्मदर घटती मृत्युदर जनसंख्या विस्फोट

C विलम्बित विस्तार अवस्था - मृत्यु दर के घटने के साथ जन्मदर घटने लगती है पर जन्म दर अधिक रहता है जनसंख्या विस्फोट है

D नीची स्थिर अवस्था - मृत्युदर न्यूनतम हो जाता है

E घटती अवस्था जन्मदर घटते-घटते मृत्यु दर से कम हो जाती हो

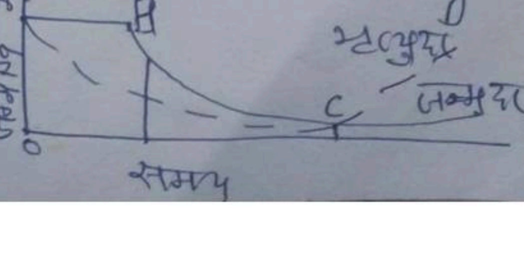

(i) A → उच्च स्थिर

(ii) A-B = प्रारम्भिक विस्तार अवस्था

(iii) B-C = विलम्बित विस्तार अवस्था

(iv) C नीचे स्थिर अवस्था

(v) C-D घटती अवस्था

जनसंख्या, गरीबी एवं पर्यावरण संकट

जनसंख्या, गरीबी और पर्यावरण का आपस का निकट सम्बन्ध होता है। जनसंख्या वृद्धि के कारणों में गरीबी भी एक है। प्राय: गरीबों के बच्चे अधिक होते हैं और उनके परिवार का आकार बड़ा होता है। गरीबों में बच्चे परिवार की आय में वृद्धि के साधन बनते हैं अत: उनका परिवार पर भार महसूस नहीं किया जाता। गरीबों में रहनसहन का स्तर अत्यन्त निम्न होता है। शिक्षा की कमी, मनोरंजन का अभाव पाया जाता है यह के रूढ़ियों एवं सामाजिक मान्यताओं से बंधे रहते हैं। निर्धनों का एक बड़ा भाग गांवों रहता है जहां प्रच्छन्न बेरोजगारी पायी जाती है गरीबों में जनसंख्या वृद्धि के समस्त सामाजिक एवं आर्थिक कारण विद्यमान रहते है।

बढ़ती जनसंख्या पर्यावरण की गुणवत्ता पर नकारात्मक प्रभाव डालता है जनसंख्या वृद्धि से विस्तृत खेती को बढ़ावा देती है इससे वन विनाश को बढ़ावा मिलता है परती भूमि यहां तक कि जल संग्रहण के क्षेत्रों को भी कृषि के कार्य में लगाया जाता है विश्व बैंक के एक रिपोर्ट के अनुसार निम्न आय वाले देशों में 65% जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है इनका निर्वाह जंगलों, पेड़-पौधो, तथा पशुओं पर सीधे निर्भर करता है। जो पर्यावरण के संरक्षण पर ध्यान नहीं देते हैं ग्रामीण जनघनत्व पर्यावरण घनत्व को व्यापक क्षति पहुंचाती है। मैदानी क्षेत्रों में रहने वाले भूमिहीन ग्रामीण, गरीब, व अन्य लोग वनों की क्षति पहुंचाते है

मानव संसाधन (Human Resources)

किसी भी देश के आर्थिक विकास में मानव संसाधन की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। मानव संसाधन से लोगो की संख्या और योग्यता, शिक्षण, प्रशिक्षण, कौशल युक्त बनाने से लगाया जाता है। आर्थिक विकास में प्राकृतिक संसाधनो तथा पूंजी की मात्रा की विशेष महत्वपूर्ण भूमिका होती है फिर भी यह आर्थिक विकास के निर्जीव साधन है। मानव ही वह शक्ति है जो इन संसाधनो को अपनी कुशलता तथा बौद्धिक क्षमता द्वारा वांछित दिशा में गतिशील कर इनका कुशलतम उपयोग करती है तथा विकास का मार्ग प्रशस्त करती है आर्थिक विकास के लिए मानव संसाधन प्राकृतिक संसाधनो की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण है।

आर्थिक विकास प्राकृतिक संसाधनो, पूंजी की मात्रा, तकनीकी ज्ञान तथा श्रम शक्ति पर निर्भर करता है आर्थिक विकास के निर्धारक घटको में श्रम शक्ति सबसे महत्वपूर्ण एवं सक्रिय घटक है साइमन कुजनेट्स का कथन है कि "अन्य बातो के यथावत रहने पर जनसंख्या की प्रत्येक वृद्धि श्रम शक्ति को बढ़ाती है। हां इसका श्रम शक्ति के लिए निश्चित योगदान इस बात पर निर्भर करेगा कि क्या जनसंख्या वृद्धि मृत्यु दर गिरने के कारण अथवा शुद्ध देशान्तरण के कारण या जन्म दर में वृद्धि के फलस्वरूप हुई है।"

जीवन तालिका (Life-Table)

जनांकिकी प्रमापो की उपलब्ध तकनीकों में जीवन तालिका सर्वाधिक व्यापक एवं प्रभावशाली मानी जाती है इस सांख्यिकीय प्रविधि की सहायता से किसी समाज की जनसंख्या की औसत आयु एवं मृत्यु की सम्भावनाओं का अनुमान लगाया जा सकता हैं जीवन तालिका इन लोगो के जीवन का इतिहास हैं जिनको कि एक निश्चित संख्या में लेकर जीवन तालिका में तब तक अध्ययन करते हैं जब तक कि एक भी व्यक्ति जीवित रहता हैं अथवा सब व्यक्ति मर नहीं जाते। अन्य शब्दो में जीवन तालिका के अन्तर्गत विभिन्न आयु वर्ग के व्यक्तियो के जीवित रहने तथा उनकी मृत्यु की सम्भावनाओं को व्यक्त किया जाता हैं।

बर्कले के अनुसार "जीवन तालिका एक काल्पनिक समूह अथवा सहगण का जीवन इतिहास हैं जो मृत्यु के कारण शनैः शनैः घटता जाता हैं और तब तक चलता रहता हैं जब तक कि एक भी व्यक्ति जीवित रहता हैं।" जीवन तालिका किसी विशिष्ट जनसंख्या में व्यक्तियों की सम्भावित जीवन अवधि तथा उसकी मृत्यु की सम्भावित आयु दर्शाने के लिए की गयी उद्देश्यपरक जनांकिकीय तालिका है इस तरह से जीवन तालिका किसी काल्पनिक जनसंख्या या जनसमूह जिसका आकार समाज में प्रचलित आयु-विशिष्ट मृत्युदरों के अनुसार घटता जाता हैं का जीवन इतिहास हैं।

जीवन - तालिका का उपयोग
(Uses of Life - Tables)

व्यवहारिक जीवन में जीवन तालिका के अनेक उपयोग है और इन्ही उपयोगिता के कारण जीवन तालिका का जनांकिकी के अध्ययन में महत्व बढ़ता जा रहा है

1 - जन्म के समय जीवन प्रत्याशा :- इसकी सहायता से यह जानकारी प्राप्त की जा सकती है कि एक जीवित जन्मे शिशु की औसत रूप से कितने वर्ष तक जीवित रहने की सम्भावना है। इससे जीवन प्रत्याशा की माप की जाती हैं इसमें किसी देश के लोगो का रहन-सहन के स्तर तथा उस देश के स्वास्थ्य सेवाओ पर प्रकाश डालता है।

2 - प्रजननशीलता का अध्ययन - इससे प्रजननशीलता का अध्ययन किया जाता है इनमें विवाहित स्त्रियों को कई उपवर्गों में विभाजित कर दिया जाता हैं

3 - जीवन बीमा का महत्व - जीवन बीमा व्यवसाय में जीवन तालिका का बहुत ~~महत्व~~ महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं इसकी सहायता से प्राप्त जानकारी विभिन्न आयु वर्ग के व्यक्तियों की जीवन प्रत्याशा कितना हैं

4 - जनसंख्या प्रक्षेपण में महत्व - इसकी सहायता से इस बात का जानकारी प्राप्त हो सकती हैं कि प्रजनन आयु वर्ग की महिलाओं का प्रतिस्थापन किस प्रकार हो रहा हैं तथा एक दी हुई प्रजनन शीलता के आधार पर जनसंख्या किस दर से बढ़ेगी।

5 - मृत्यु क्रम का प्रभाव - जीवन तालिका का प्रयोग दो जनसंख्याओं में मृत्यु स्थिति की तुलना करने और उसके प्रभाव का अध्ययन करने के लिए किया जाता है।

6 - नीति निर्माण में सहायक - इससे शुद्ध प्रजनन दर, भविष्य में श्रम शक्ति, विधवाओं एवं विधुरो की संख्या, स्कूल जाने वाले बच्चो की संख्या, अनाथो की संख्या, प्रवास आदि का अनुमान लगाया जा सकता हैं, अशोधित मृत्यु दर, तथा

भारत की जनसंख्या नीति
Population Policy in India

जनसंख्या नीति के माध्यम से किसी देश में जनसंख्या नियोजन किया जाता है। जनसंख्या नियोजन की सफलता जनसंख्या नीति की उपयुक्तता एवं उसके कुशल क्रियान्वयन पर निर्भर करता है। जनसंख्या नीति का व्यापक अर्थ में जनसंख्या के परिमाणात्मक एवं गुणात्मक दोनो पहलुओं पर अध्ययन किया जाता है। परिमाणात्मक पहलू के अन्तर्गत जनसंख्या के आकार एवं संरचना को इस प्रकार आवश्यकतानुसार नियन्त्रित किया जाता है ताकि राष्ट्रीय साधनो के साथ जनसंख्या का संतुलन हो सके। गुणात्मक पहलू से आशय है - जनता के स्वास्थ्य, जीवन प्रत्याशा शिक्षा प्रवासी प्रवृत्ति आदि में सुधार लाना।

भारतीय नियोजन के आरम्भिक वर्षो में ही जनसंख्या नीति की शुरुआत हो चुकी थी लेकिन आरम्भिक वर्षो में जनसंख्या समस्या को कोई महत्वपूर्ण स्थान नहीं दिया गया तीसरी पंचवर्षीय योजना में जनसंख्या में विस्फोट स्थिति के कारण जनसंख्या नियन्त्रण के लिए प्रभावी नीति का अनुसरण किया गया चौथी योजना में परिवार नियोजन कार्यक्रम को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गयी पांचवी योजना में आपात काल के दौरान 16 अप्रैल 1976 को राष्ट्रीय जनसंख्या नीति की घोषणा किया गया आपात काल के दौरान घोषित जनसंख्या नीति में राज्य सरकारो को यह अधिकार दिया गया कि यदि वे चाहे तो अनिवार्य बन्ध्याकरण के लिए कानून बना सकती हैं। 1977में इसे स्वेच्छा से घोषित किया गया।

जनांकिकीय लाभांश से आशय
[Explain the Demographic Dividend]

जनांकिकी लाभांश से आशय कुल जनसंख्या में कार्यशील जनसंख्या की बहुलाभांश में मौजूदगी जनांकिकीय लाभांश की स्थिति कहलाती है IMF के अनुसार 15-64 वर्ष की आयु सीमा के दायरे में आने वाले हिस्से को कार्यशील जनसंख्या कहा जाता है आर्थिक समीक्षा 2012-13 कार्यशील जनसंख्या के दायरे में 15-59 की आयु सीमा में आने वाले लोगो को स्थान प्रदान करती है जनांकिकी लाभांश की स्थिति निर्भरता अनुपात में कमी की ओर ले जाती है और ऐसी स्थिति बेहतर उत्पादन में वृद्धि की सम्भावना पैदा करती है।

जनांकिकी लाभांश का सम्बन्ध जनांकिकी संक्रमण की विशेष अवस्था से होता है जिससे कभी न कभी हर देश को गुजरना होता है जनांकिकी संक्रमण की दूसरी अवस्था में उच्च जन्म दर निम्न मृत्युदर की स्थिति जनांकिकीय लाभांश की ओर ले जाती है। अधिक कार्यशील जनसंख्या होने से अधिक श्रमिक, अधिक आय, अधिक बचत, प्रति श्रमिक अधिक पूंजी और अधिक सम्पत्ति यह इसलिए भी महत्वपूर्ण है ~~कि जनांकिकी~~ उत्पादक वर्ग में वृद्धि होती है वैश्विक जनांकिकीय रुझानो के इतिहास में 2016 का वर्ष महत्वपूर्ण था क्योंकि पहली बार उन्नत देशो के कार्यशील जनसंख्या (15-59 वर्ष) में गिरावट की स्थिति दिखायी पड़ती है संयुक्त राष्ट्र का अनुमान है कि अगले तीन दशको के दौरान चीन एवं रूस की कार्यशील जनसंख्या 20% गिरावट की सम्भावना है इस दशक में भारत में कार्यशील जनसंख्या $\frac{1}{3}$ की वृद्धि होगी।

जनांकिकीय लाभांश: अवसर या चुनौती

जनांकिकीय लाभांश अवसर भी हैं और चुनौती भी। यदि बढ़ती हुई जनसंख्या की कार्यशील समूह को बेहतर स्वास्थ्य और शिक्षा सुविधा तक पहुंच सुनिश्चित करते हैं तो उसकी विकसित शारीरिक और मानसिक क्षमता उसे उत्पादन के लिए कहीं अधिक सक्षम बनाएगी। यदि इसे बेहतर कौशल और प्रशिक्षण से लैस किया जाता है तो यह इसकी उर उत्पादकता में वृद्धि के लिए उत्प्रेरक का काम करती हैं लेकिन इन सब का लाभ अर्थव्यवस्था को तभी मिल पायेगा जब हम इनके लिए बेहतर श्रम उत्पादकता वाले रोजगार के अवसर सृजन पर्याप्त एवं समुचित मात्रा में करते हैं अन्यथा जनांकिकीय लाभांश द्वारा सृजित सम्भावनाओं का दोहन करते हुए उसका लाभ उठा पाना मुश्किल होगा। दूसरी बात जनांकिकीय लाभांश की स्थिति वर्तमान के लिए अवसर हैं और भविष्य के लिए चुनौती। कारण यह है कि कोई भी देश हमेशा जनांकिकी लाभांश की स्थिति में नहीं बना रह सकता हैं उसे जनांकिकी लाभांश की ~~स्थिति~~ में प्रतिकूल होती चुनौती से भी जूझना पड़ता हैं, विशेषकर तब जब जनसंख्या वृद्धि दर में गिरावट जनसंख्या वृद्धि दर को प्रतिस्थापित दर पर और बढ़ती हुई जीवन प्रत्याशा बुजुर्गों की बढ़ती आबादी की ओर ले जाय। आर्थिक समीक्षा 2012-13 इस बात का उल्लेख करता हैं कि जनांकिकीय लाभांश की समृद्धि में अत्यंत सीमित भूमिका होती है।

जनांकिकीय समंको का महत्व
(Importance of Demographic Data)

जनांकिकीय समंक सांख्यिकी का सबसे प्राचीनतम रूप हैं संसार के सभी देशों में जनसंख्या-समंको का संकलन अति प्राचीन काल से किया जा रहा है प्रारम्भ में इस समंको का संकलन अधिकतर राजनीतिक उद्देश्य हेतु किया जाता था लेकिन वर्तमान युग में इसकी सर्वांगीण उपयोगिता एवं महत्व है।

1 सामाजिक महत्व - सामाजिक दृष्टि से यह अत्यधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि यह सामाजिक संस्थाओं, रीति रिवाजों और समस्याओं के दर्पण के रूप में कार्य करता हैं धर्म, जाति, पेशा, बेरोजगारी, गरीबी, शिक्षा, निरक्षरता, बाल विवाह, आदि सभी विषयों पर समंक जानकारी देते हैं और उनके सुधार में सहायक होते हैं।

2- आर्थिक महत्व - जनसंख्या समंक आर्थिक नीतियों के निर्धारण के प्रमुख आधार है विशेष रूप से किसी अर्थव्यवस्था के योजनाबद्ध विकास की सफलता का सारा दारोमदार वास्तविक जनसंख्या समंको की निरन्तर उपलब्धता पर निर्भर करता है इसमें खाद्य नीति, रोजगार नीति, परिवार नियोजन शहरीकरण, औद्योगिकरण, स्थानीकरण, और प्रादेशिक संतुलन आदि में सहायक होते है।

3 राजनीतिक महत्व - जनांकिकीय समंको का विशेष महत्व हैं चुनाव हेतु निर्वाचन क्षेत्रो का सीमांकन SC, ST तथा OBC का संरक्षण एवं प्रतिनिधित्व सम्बन्धी आंकड़े, एवं प्रशासन में भागीदारी, केन्द्र राज्य के बीच कर बंटवारा, नगरो का क्षेत्र विस्तार एवं निर्माण कार्य आदि समंको की सहायता से ही कार्य सम्भव होता है।

राष्ट्रीय जनसंख्या नीति, 2000
National Population Policy, 2000

भारत की नई जनसंख्या नीति की घोषणा 15 फरवरी, 2000 को की गयी थी उल्लेखनीय है कि नई नीति की घोषणा के लगभग तीन माह बाद 11 मई 2000 को भारत की जनसंख्या 1 अरब के आकडे को पार कर गयी थी भारत में सर्वप्रथम जनसंख्या बनाने का सुझाव 1960 में दिया गया था 1976 में देश की पहली बार जनसंख्या नीति की घोषणा की गयी इसके 1978 संशोधित जनसंख्या नीति की घोषणा की गयी थी। ~~2000~~ राष्ट्रीय जनसंख्या नीति 2000 के प्रमुख बिन्दु है –

1- वर्ष 2045 तक (अब 2070 तक) जनसंख्या वृद्धि दर को स्थिर करना।
2- विवाह की उम्र लड़कियों के मामले में 18 वर्ष तथा लड़के के लिए 21 वर्ष होगी गरीबी रेखा से निचे जीवनयापन करनेवाले उन दम्पत्तियों पुरस्कृत किया जायेगा जिनकी पहली संतान 21 वर्ष बाद या इससे अधिक होगी
3- कुल प्रजनन दर वर्ष 2010 तक 2.1 करना था।
4 बाल विवाह निरोधक अधिनियम तथा लिंग परीक्षण के प्रावधान को सख्ती से लागू करना।
5- 14 वर्ष तक की आयु वाले बच्चो की स्कूली शिक्षा को अनिवार्य एवं निःशुल्क बनाना।
6 विवाह, गर्भावस्था तथा जन्म मृत्यु पंजीकरण को अनिवार्य बनाया जाना
7- मातृत्व मृत्युदर को प्रति एक लाख पर 100 से नीचे के स्तर पर लाना
8- शिशु मृत्यु दर को प्रति हजार पर 30 से निचे लाना।
9- 80% प्रसव अस्पतालो, नर्सिंग होमो आदि में और 100% प्रशिक्षित लोगो से प्रसव कराना
10 गर्भ निरोध के विभिन्न विकल्प उपलब्ध कराना।

भारत में जनांकिकी संक्रमण का अर्थ

भारत जनांकिकी संक्रमण के चार विस्तृत चरणों में से दो चरण पार कर चुका है। 1921 ई० तक भारत पूर्व औद्योगिक कृषि प्रधान समाज रहा था जिसमें जन्म दर एवं मृत्यु दर दोनों के उच्च रहने के कारण जनसंख्या वृद्धि दर अत्यन्त निम्न रही। इस समय तक भारत जनांकिकी संक्रमण के प्रथम अवस्था में था 1921 से 1951 ई तक जन्म दर पहले जैसा लगभग बनी रही एवं इसमें कम गिरावट दर्ज की गयी लेकिन अकाल व संक्रमण रोगों पर नियन्त्रण होने व परिणाम स्वरूप मृत्यु दर में कमी आने के कारण जनसंख्या में वृद्धि दर अत्यधिक तीव्र रही। वस्तुतः 1961 के बाद से जन्म दर में थोड़ा ह्रास देखा गया था लेकिन वास्तविक वृद्धि दर 2% से अधिक ही थी।

वर्ष 1951 के बाद पहली बार वास्तविक जनसंख्या वृद्धि दर 2% से कम हुई है। 1951 ई० के बाद भारत जनांकिकी संक्रमण के तीसरे चरण में प्रवेश कर चुका है एवं प्राकृतिक वृद्धि दर में गिरावट की प्रवृत्ति शुरू हुई है। ऐसा माना जा रहा है कि वर्तमान जन्म दर ह्रास प्रवृत्ति के रहने से भारत 2021 तक ही जनांकिकी संक्रमण के चौथे चरण में पहुंच जायेगा लेकिन 2021 के आंकड़े के अनुसार भारत की जनसंख्या वृद्धि तीव्र गति से बढ़ी है लेकिन घटते दर से हुई वृद्धि जन्म दर में हुई कमी का प्रमुख कारण रहा है।

माल्थस के जनसंख्या सिद्धान्त का प्रभाव :

माल्थस के सिद्धान्त का तमाम आलोचना के बाद भी पूरी दुनिया में माल्थस के जनसंख्या सिद्धान्त का प्रभाव पड़ा सभी विकसित एवं सभ्य देशो को किसी न किसी रूप में समर्थन प्राप्त है ~~मार्शल के~~ माल्थस के सिद्धान्त के 200 वर्ष बीत जाने के बाद भी उनके सिद्धान्त का आकर्षण कम नहीं हुआ। माल्थस के जनसंख्या सिद्धान्त एवं उसकी चेतावनी का ही प्रभाव रहा हैं कि पाश्चिमी यूरोप तथा इग्लैण्ड आदि देशो को अति जनसंख्या का सामना नही करना पड़ा इन देशो के लिए यह जीवन का एक ~~अंग~~ अंग बन गया है जो संयम आदि के मार्ग पर न चलकर सन्तति निग्रह के अन्य उपायो को अपना रहे है।

माल्थस ने अति जनसंख्या के दुर्गुणो से खबरदार कर लोगो को इस तरफ सोचने को बाध्य कर दिया। और उसका परिणाम यह हुआ कि लोगो ने जनसंख्या नियन्त्रण के तरिके अपनाने शुरू कर दिये। लोगो ने बड़ी संख्या में कृत्रिम अवरोध, जैसे देर से विवाह करना, गर्भ निरोधक प्रयोग, आदि। प्रो० सेम्युलसन के अनुसार "माल्थस का सिद्धान्त आज भी एक जीवित सत्य हैं। माल्थस का सिद्धान्त प्रत्यक्ष रूप से उत्पत्ति ह्रास नियम पर आधारित हैं और इसमें आज भी सत्यता है।"

भारत मे माल्थस का जनसंख्या सिद्धान्त लागू है जहां जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ रही है जो 1951 में जनसंख्या 36 करोड़ थी जो 2011 में बढ़कर 121.08 करोड़ हो गयी, भारत में आज भी सामाजिक तथा धार्मिक दशाएं जन्म दर बढ़ाने में सहायक हैं। इस देश की एक तिहाई भाग आज भी अशिक्षित है जो जन्म दर रोकने में असफल हैं। देश में जीवन स्तर अत्यन्त निम्न स्तरीय है बेरोजगारी गरीबी, भुखमरी, कुपोषण आदि बढ़ रही है। देश मे अनाज है लेकिन 25% लोगो के पास खरिदने का क्रय शक्ति नहीं है।

(2) सतत विकास :- धारणीय विकास, संपोषणीय या निर्वहनीय विकास

Sustainable Development

सतत विकास को अंग्रेजी के दो शब्दो Sustain + Development से निकल कर बना हैं Sustain का अर्थ हैं सम्भावना या पोषित करना है Development का अर्थ विकास या जीवन की गुणवत्ता में सुधार। सतत विकास की अवधारणा की शुरुआत 1962 में हुई जब वैज्ञानिक रॉकल कारसन ने दी 'साइलेंट स्प्रिंग' नामक पुस्तक लिखी। सतत विकास का अर्थ आर्थिक विकास के साथ-साथ पर्यावरण को सुरक्षित करना इसका उद्देश्य वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियों के लिए प्राकृतिक संसाधन सुरक्षित रखना हैं। सतत विकास की अवधारणा आर्थिक विकास की नीतियों को पर्यावरण के अनुरूप बनाने पर जोर देती हैं तथा पर्यावरण के विरुद्ध चलने वाली विकास नीतियों में बदलाव लाना हैं।

ब्रेण्टलैण्ड आयोग ने अपनी रिपोर्ट (Our common future) 1987 में दी जिसमें कहा कि "सतत विकास वह विकास हैं जो भावी पीढ़ियों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए अपनी वर्तमान आवश्यकता को पूरित करता हो तो उसे सतत विकास कहा जाता हैं।" इस रिपोर्ट में कहा गया कि विकास के हमारी आज की जरूरतों को पूरा करें साथ ही साथ आने वाली पीढ़ियों की जरूरतो की भी अन देखी न करें। सतत विकास प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण, ऊर्जा, कचरे का निस्तारण, परिवहन के प्रबन्ध को प्रोत्साहन देता हैं

गरीबी का दुश्चक्र सिद्धान्त (10)
Theory of vicious circle of poverty)

अल्पविकासित देश गरीबी की भँवर (poverty) में फंसे हुए हैं, जिससे सामान्यतया गरीबी के कुचक्र के रूप में जाना जाता हैं। जिससे गरीबी पुनः गरीबी को जन्म देती हैं प्रो० नर्क्स के शब्दो में गरीबी के कुचक्र से आशय नक्षत्रमंडल के समान शक्तियों का इस प्रकार से घुमना हैं कि वे परस्पर क्रिया प्रतिक्रिया करती हुई निर्धन देश को सदैव निर्धनता की अवस्था में बनाये रखे तथा उन्होंने सम्पूर्ण परिस्थिति को इस प्रकार व्यक्त किया एक देश गरीब हैं क्योंकि वह गरीब हैं। यदि कोई देश गरीब होगा तो उसके पास आय कम होगी, लोगों का उपभोग स्तर नीचा होगा, कार्य करने वाली जनसंख्या को न तो ठीक से खाना मिलेगा न हो उचित शिक्षा का प्रबन्ध होगा। जिससे श्रमिक कम कार्यकुशल तथा खराब स्वास्थ्य होगा। उनकी उत्पादकता कम होगी पुनः आय व उत्पादकता कम होगी और आय की कमी जो गरीबी के रूप में परिलक्षित होगी जो लगातार आय में कमी लायेगी जिससे बचत कम या शून्य होगी इस दशा में पूंजी निर्माण की दर में कमी के कारण विनियोग में कमी उत्पादन में कमी आदि देखने को मिलेगा। प्रो० नर्क्स ने गरीबी के दुश्चक्र की व्याख्या मांग एवं पूर्ति दोनो पक्षों पर की हैं।

गरीबी के कुचक्र। दुश्चक्र का पूर्ति पक्ष :-

प्रो० नर्क्स ने बताया अल्पविकासित देश में वास्तविक आय की मात्रा अत्यन्त कम हैं जिसके ~~फलस्वरूप~~ परिणाम स्वरूप बचत की क्षमता अत्यन्त ही कम हैं पर आय की कमी अर्थव्यवस्था में अल्प उत्पादन का परिणाम हैं और अल्प उत्पादकता अधिकतर पूंजी की कमी के कारण जो बचत की क्षमता में कमी के कारण हैं।

इस प्रकार अल्प आय के कारण बचत की (11) क्षमता में कमी से जो चक्र प्रारम्भ हुआ था वह वहां पर आकर पूरा हो जाता है यही क्रम निरन्तर चलता रहता है।

पूर्ति पक्ष (Supply Side)

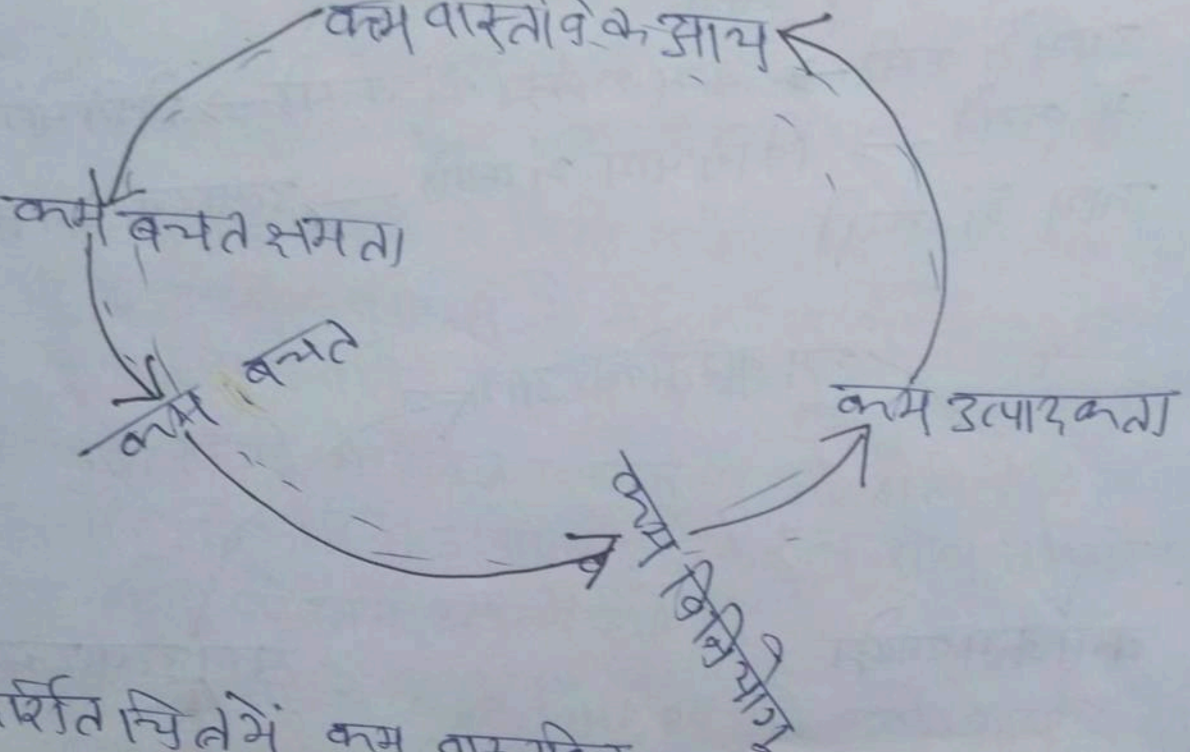

प्रदर्शित चित्र में कम वास्तविक आय के कारण बचत करने की क्षमता कम होगी जिससे बचत की मात्रा में कमी आयेगी इससे पूंजी निर्माण तथा विनियोग की मात्रा में कमी आयेगी जिससे उत्पादकता की कमी तथा वास्तविक आय में कमी होगी बायी ओर से चलकर यह चक्र जहां से प्रारम्भ हुआ था वहीं पूर्ण हो जाता है।

मांग पक्ष (Demand Side) –

किसी भी अर्थव्यवस्था का आर्थिक विकास केवल बचत तथा पूंजी निर्माण की दर पर ही निर्भर नहीं करता है उत्पादित वस्तु की मांग या विनियोग के लिए प्रेरणा का होना अत्यन्त आवश्यक है यदि बाजार का अभाव हो तो पूंजी की प्रचुर मात्रा के बावजूद भी आर्थिक विकास नहीं हो सकेगा। प्रो० नर्क्स ने बताया कि अल्पविकसित देशों में मांग पक्ष भी कुचक्र से प्रभावित है।

अल्पविकसित देश में वास्तविक आय की कमी है जिसके कारण उसकी क्रय शक्ति कम है। इससे साहसी को मांग की कमी के कारण विनियोग की प्रेरणा कम मिलती है। पर्याप्त मांग के अभाव में कोई भी साहसी पूंजी विनियोग नहीं करेगा। आय

आय में कमी → क्रय शक्ति में कमी → विनियोग की प्रेरणा में कमी → विनियोग में कमी → उत्पादन ह्रास → वास्तविक आय में कमी

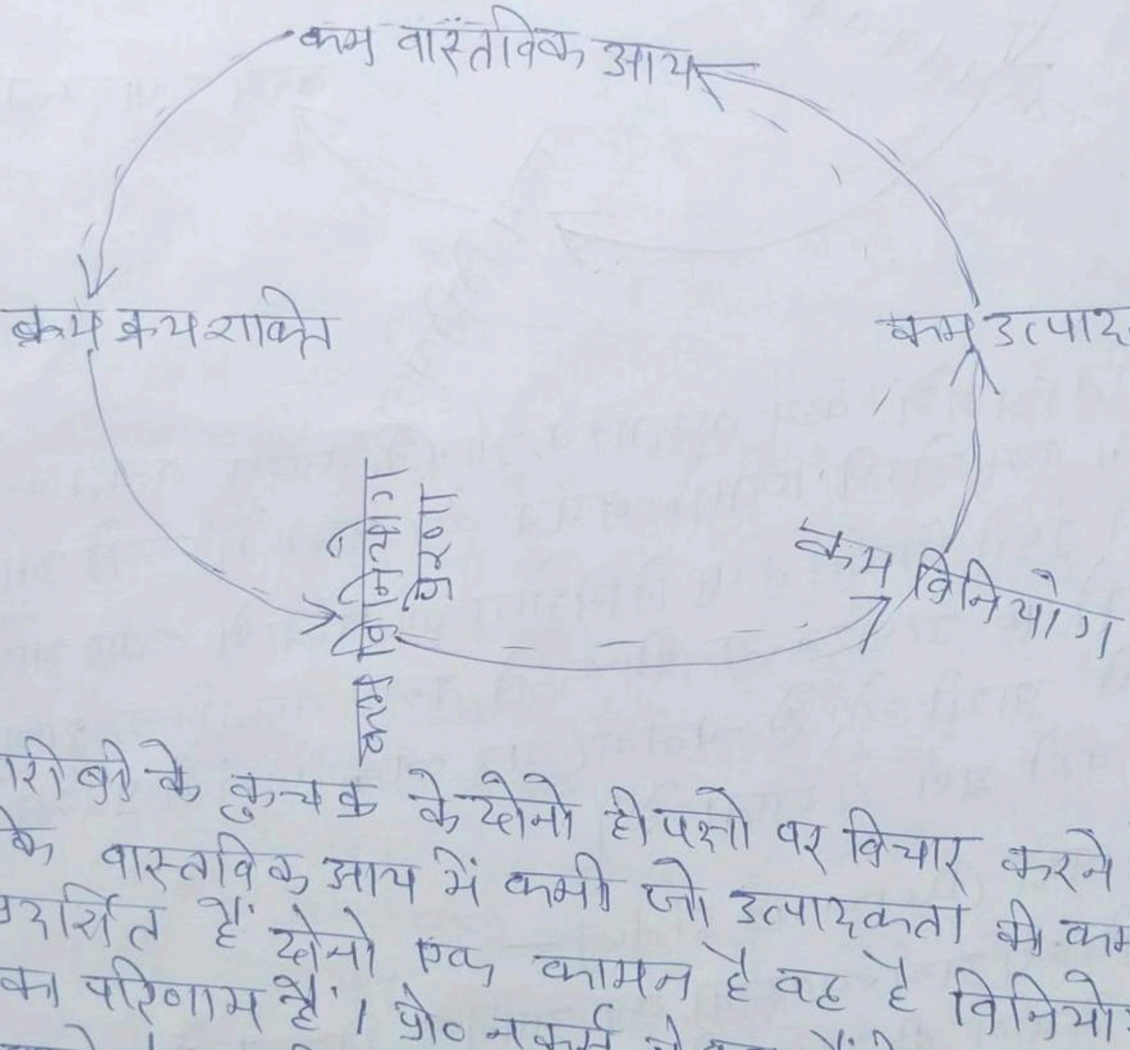

गरीबी के कुचक्र के दोनो ही पक्षो पर विचार करने से हम पाते है कि वास्तविक आय में कमी जो उत्पादकता की कमी के रुप में प्रदर्शित है दोनो एक कामन है वह है विनियोग की न्यूनता का परिणाम है। प्रो० नर्क्स ने कहा है कि गरीबी का कुचक्र बढ़ने की प्रवृत्ति जरुर होती है लेकिन यह अभेद्य नहीं है और यदि इसे एक बार किसी बिन्दु पर तोड़ दिया जाय तो इसके विभिन्न तत्वों में चक्रात्मक सम्बन्ध होने के कारण आर्थिक विकास की क्रिया संचयी होगी इसे संतुलित विकास प्रत्यागम से तोड़ा जा सकता है।

आर्थिक विकास के घटक स्पष्ट कीजिए -

प्रत्येक देश की आर्थिक समृद्धि अनेक घटकों से प्रभावित होती है -

प्राकृतिक संसाधन :- प्राकृतिक संसाधनों से आशय उन समस्त भौतिक संसाधनों से है जो प्रकृति की ओर से किसी देश को उपहार स्वरूप प्राप्त होता है जैसे भूमि, खनिज पदार्थ, वन एवं जल सम्पदा, वर्षा जलवायु, मिट्टी की बनावट भौगोलिक आदि यह प्राकृतिक साधन देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

मानवीय संसाधन या श्रम किसी देश में रहने वाली कार्यशील जनसंख्या से है। श्रम को उत्पादन का एक महत्वपूर्ण एवं सक्रिय साधन साधन माना जाता है मानवीय श्रम ही वह शक्ति है जिस पर देश का आर्थिक विकास निर्भर करता है मानव संसाधन विकास किसी देश का आर्थिक विकास उस देश में उपलब्ध मानव पूंजी के स्टॉक तथा संचय की दर पर निर्भर करता है विकासशील देशों में नियोजित आर्थिक विकास की प्रक्रिया में मानव के विकास पर समुचित ध्यान नहीं दिया जाता। यही कारण है कि इन देशों में विकास के वांछित लक्ष्य प्राप्त नहीं प्राप्त हो पाते हैं। पूंजी निर्माण आर्थिक विकास की एक पूर्व आवश्यकता है जब तक राष्ट्र में पर्याप्त मात्रा में पूंजी निर्माण नहीं होगा तब तक आर्थिक विकास का लक्ष्य पूरा नहीं हो सकता है। उद्यमशीलता किसी देश के आर्थिक विकास पर उस देश के संगठनात्मक ढांचे का भी प्रभाव पड़ता है। वैज्ञानिक प्रगति, तकनीकी ज्ञान तथा नवीन खोजों का आर्थिक विकास की दृष्टि से तब तक कोई महत्व नहीं है जब तक उन्हें व्यवहारिकता में न लाया जाय। तकनीकी प्रगति एवं नवप्रवर्तन पर जोर से किसी देश की अर्थव्यवस्था का ढांचा मजबूत होता है। इसके अलावा विदेशी पूंजी, अवस्थापना, राजनीतिक घटक, सामाजिक तथा धार्मिक घटक आदि पर निर्भर करता है।

The Role of Education and Research in Economic Development.

आर्थिक विकास में शिक्षा एवं शोध की भूमिका :-

किसी देश का आर्थिक विकास उसके कार्यकुशल, शिक्षित एवं प्रशिक्षित श्रम शक्ति पर निर्भर करता हैं। आर्थिक विकास एक यांत्रिक क्रिया मात्र ही नहीं वरन अंतिम रूप से यह एक मानवीय उपक्रम हैं अन्य मानवीय उपक्रमों की भांति इसका परिणाम इसका परिणाम सही अर्थों में इसको संचालित करने वाले जन समुदायों की कुशलता, गुणों एवं प्रवृत्तियों पर निर्भर करता हैं। यदि किसी देश की जनसंख्या उसके आर्थिक विकास की आवश्यकताओं के अनुरूप हैं और उसके निवासी विवेकशील, परिश्रमी, शिक्षित, व कार्यदक्ष हैं तो निसंदेह अन्य बातों के समान रहने पर उस देश का आर्थिक विकास अधिक होगा।

आर्थिक विकास की दृष्टि से भौतिक पूंजी की अपेक्षा मानवीय पूंजी को अधिक महत्वपूर्ण समझा जाता हैं क्योंकि मानवीय संसाधनों की कुशलता एवं दक्षता पर ही आर्थिक विकास का ढांचा खड़ा किया जा सकता है। यदि किसी देश के पास पर्याप्त व श्रेष्ठतम मानव पूंजी उपलब्ध हैं तो उस देश की भौतिक पूंजी और भी अधिक उत्पादक बन जाती हैं। इसके विपरित यदि मानव पूंजी का अभाव हैं तब भौतिक पूंजी का लाभपूर्ण उपभोग नहीं हो सकता। क्योंकि ऐसी हालात में चलती हुई मशीने रुकने लगती हैं उपकरण समय से पूर्व घिसने लगते हैं उपज की किस्म व उत्पादकता का स्तर गिर जाता हैं। आर्थिक पिछड़ापन दूर करने और प्रगति, क्षमता व प्रोत्साहन उत्पन्न करने के लिए यह आवश्यक हैं कि लोगो के ज्ञान व कुशलता में वृद्धि की जाय। वास्तव में मानव साधन के गुण में सुधार किए बिना अल्पविकसित देशों में कोई प्रगति सम्भव नहीं हैं।

पूँजी निर्माण का अर्थ समझाइए।

[Explain the meaning of capital formation]

एक दी हुई समयावधि में किसी अर्थव्यवस्था के पूंजी स्टॉक में वृद्धि उस समयावधि में पूंजी निर्माण कहलाती हैं, जैसे यदि किसी अर्थव्यवस्था में पूंजी स्टाक की कुल मात्रा K हो और एक वर्ष बाद उसकी पूंजी बढ़कर K_1 हो जाय तो $K_1 - K$ जिसे ΔK कह सकते हैं उस वर्ष में पूंजी निर्माण कहलायेगा। अर्थात पूंजी निर्माण से आशय एक दी हुई समयावधि में अर्थव्यवस्था के वर्तमान साधनो अथवा कुल आय के उस भाग से हैं जिसका प्रयोग वह अर्थव्यवस्था में उपभोग व्यय पर न करके पूंजीगत वस्तुओं के निर्माण पर करती हैं जिससे उसकी उत्पादन क्षमता बढ़ जाय।

$S = Y - C$ जहां S = बचत, Y = आय, एवं C = उपभोग

हैं। जहां बचत S पूरी मात्रा विनियोग हो जायेगी (S = I) जिससे पूंजी स्टाक बढ़ जायेगा। प्रो० डी ब्राइट ने कहा हैं पूंजी स्टाक में निम्नांकित आयेगे भूमि से सम्बन्धित निर्माण या सुधार, व्यक्तिगत तथा सार्वजनिक उत्पादो के हाथ में मशीन तथा यन्त्र, व्यापारिक उद्यमो के हाथ में कच्चे माल का स्टाक आदि पूंजी से आशय यह भी हैं कि मनुष्य द्वारा निर्मित उन सभी वस्तुओं से हैं जो उत्पादन में प्रयुक्त होती हैं ये उत्पादन क्रिया में समाप्त नहीं हो जाती हैं जैसे-मशीन, प्लांट, भवन आदि देश की अपनी मुद्रा पूंजी नही हैं पर विदेशी मुद्रा पूंजी होगी पूंजी आर्थिक को निर्धारित करने वाले कारको में सबसे महत्वपूर्ण कारक हैं यह अर्थव्यवस्था में राष्ट्रीय आय के स्तर उत्पादन का ढांचा, तकनीकी प्रगति, उत्पादन क्षमता आदि का निर्धारण करती हैं इसप्रकार पूंजी निर्माण आर्थिक विकास की एक अनिवार्य आवश्यकता हैं तथा यह आर्थिक विकास का प्रधान-चालक तत्व हैं। वह प्रक्रिया जिसके द्वारा किसी अर्थव्यवस्था में पूंजी स्टाक में वृद्धि लायी जाती हैं उसे हम पूंजी निर्माण कहते हैं।

अल्पविकसित देशो में जनसंख्या विस्फोट की समस्या को स्पष्ट किजिए।
Explain the problem of Population explosion in under development countries.

संयुक्त राष्ट्र संघ 2025 रिपोर्ट के अनुसार विश्व की जनसंख्या 8.2 अरब को पार कर चुकी हैं जनसंख्या के संदर्भ में विश्व की बात किया जाय तो 1830-1930 इन 100 वर्षों में जनसंख्या दोगुनी हो गयी 1960 तक यह 3 अरब तक पहुंच गयी 1975 तक 5 अरब एवं 11 जुलाई 1987 को विश्व की जनसंख्या 5 अरब के बिन्दु को पार कर गई थी। जनसंख्या विस्फोट की अवस्था में आय में वृद्धि होने लगती हैं, शिक्षा, स्वास्थ्य व चिकित्सा सुविधाओं का क्षेत्र व्यापक हो जाता हैं जिससे मृत्यु दर में गिरावट आ जाती हैं और जन्म दर या तो स्थिर रहती हैं या मामुली गिरावट आ पाती हैं जन्म दर को प्रभावित करने वाली धार्मिक, सामाजिक, तथा सांस्कृतिक परिस्थितियों में परिवर्तन नहीं होता हैं इस प्रकार जन्म दर ऊँची एवं मृत्यु दर नीची रहती हैं जिससे जनसंख्या वृद्धि दर अधिक होती हैं इसे जनसंख्या विस्फोट कहा जाता हैं। कि अर्थव्यवस्था के विकास की दृष्टि से यह स्थिति घातक होती हैं इससे क्षेत्रीय असंतुलन बिगड़ जाती हैं। अर्थव्यवस्था में निम्न प्रकार से बाधक होती है -

* प्रति व्यक्ति आय में कमी
* जनसंख्या और खाद्य आपूर्ति में संतुलन
* जनसंख्या और पूंजी निर्माण की गति मंद
* अनुत्पादक उपभोक्ता का अत्यधिक भार
* स्वास्थ्य, शिक्षा, एवं आवास पर अत्यधिक भार
* जीवन स्तर का गिरना
* कीमत स्तर में वृद्धि एवं भुगतान संतुलन की समस्या
* बेरोजगारी में वृद्धि
* पर्यावरणीय ह्रास

45

भारत में जनसंख्या को नियन्त्रण करने के उपाय समझाइए।

जनसंख्या की वृद्धि दर में कमी लाना तथा उसका नियन्त्रण जनसंख्या नीति के विभिन्न क्षेत्रों में से एक हैं जिनके द्वारा किसी देश में जनसंख्या नियन्त्रण की जा सकती है ये वे उपाय हैं जिनको विभिन्न जनसंख्या आधिक्य वाले देशो जैसे चीन, श्रीलंका, मलेशिया आदि में प्रयोग लाया गया -

1 शिक्षा का विस्तार :- शिक्षा का विस्तार परिवार विवाह, परिवार नियोजन के प्रति जागरूकता पैदा करने वाला अकेला कारक हैं शिक्षा का विस्तार जहां एक ओर लोगो में व्याप्त सामाजिक तथा धार्मिक अवरोध को दूर करेगा वहीं लड़कियो में रोजगार के अवसर प्राप्त करने में मदद करेगा, शिक्षा लोगो की सोच को विस्तृत करती हैं। यह शहरी एवं ग्रामीण दोनो क्षेत्रो में विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रो में जागरूकता पैदा करता हैं।

2 समाज में महिला या लिंग भेद को दूर करना -
समाज महिला के प्रति चेतना पैदा करके लिंग भेद को दूर किया जा सकता है संविधान में महिला एवं पुरुष को समान अधिकार प्रदान किया है महिला सशक्तिकरण के लिए अनेक व्यवस्थाए की गयी हैं। सरकार द्वारा महिलाओं से सम्बधित विविध कार्यक्रम चलाया जा रहा है।

3 औद्योगिकरण को बढ़ावा एवं कृषिक्षेत्र का यन्त्रीकरण :- कृषि क्षेत्र का यन्त्रीकरण तथा देश में औद्योगिकरण परिवार के आकार के सम्बन्ध में लोगो के विचार में परिवर्तन लाता हैं।

4 रोजगार तथा आय में वृद्धि तथा गरीबी में कमी - गरीबी तथा आय में कमी की स्थिति में परिवार के आकार में वृद्धि होती हैं इसके लिए रोजगार के नए अवसर सृजित किया जाय

5 नगरीकरण का विस्तार - नगरी करण जितना ही अधिक होगा आवास की व्यवस्था, बच्चो की शिक्षा तथा स्वास्थ्य आदि बहुत महंगी होती जाती है इसलिए लोग छोटा परिवार रखने के लिए बाध्य होंगे।

6 परिवार नियोजन - परिवार नियोजन में परिवार के आकार को नियोजित रूप से कम रखने के उपाय करना, इनमें अधिक उम्र में विवाह करना, गर्भ निरोधको का प्रयोग आदि करके परिवार के आकार को छोटा किया जा सकता हैं।